वन्दना

श्री गणपति महाराज जी, हे प्रभुवर अपरंपार ।
कर बाँधे 'जिन्दल' खड़ा, नमन करें स्वीकार ।।

विघ्न हरे मंगल करें, हे देवों के देव ।
मुझ अज्ञानी के कारज, साथ रहें स्वयमेव ।।

महावली बजरंग बली, हे भक्तों के भगवान ।
मेरा साहस न डोले, मैं दुर्बल इन्सान ।।

देव सभी मैं पूज रहा, पुष्पों का उपहार ।
नत मस्तक है हे माता, 'जिन्दल' तेरे द्वार ।।

आपकी इच्छा होवे तो, लिखे लेखनी लेख ।
हे सरस्वती माँ शारदे, कृपा करें विशेष ।।

मैं प्राणी हूँ अज्ञानी, तुम पूर्ण विज्ञान ।
सफल मनोरथ हो मेरा, हे! मेरे भगवान ।।

ॐ

ज्योतिष सा गूढ़ विषय, बुद्धि करे क्या काम ।
ज्योतिष के विद्वानों को, 'जिन्दल' का प्रणाम ॥

अनुभव से होता 'जिन्दल', भले बुरे का ज्ञान ।
परम सत्य है प्रभु–माया, पूर्णता भगवान ॥

भड्ड नहीं भाग्य विधाता, वह भी इक इन्सान।
होनी को न टाल सके, 'जिन्दल' निश्चय जान ॥

'रत्नाकर' रत्न कोष है, हैं मोती प्रवाल ।
गहरे पानी डूब कर, ढूँढ निकालो लाल ॥

अनुज जान कर क्षमा करें, देखें कहीं जो चूक ।
ज्ञानीजन देते अकसर, क्रोध द्वेष को थूक ॥

ज्योतिष के अन्तर्गत हैं, गणित – फलित दो भाग ।
अल्प ज्ञान मुझे गणित का, फलित से है अनुराग ॥

ॐ

राशियां

बारह राशि कुल होतीं, गिनों मेष से मीन ।
ग्रंथों में नौ ग्रह लिखे, और आ गये तीन[1] ।।

प्रथम राशि मेष कहावे, दूजी का वृष नाम ।
मिथुन–कर्क, तीजी–चौथी, सिंह, कन्या छः धाम ।।

सप्तम राशि तुला गिनी, वृश्चिक का अंक आठ ।
धन गणना में नौवीं है, मकर है दसवीं बाट ।।

कुम्भ एकादश कही गई, बारहवीं होगी मीन ।
चर–स्थिर या दो भाव के, वर्ग[2] बनेंगे तीन ।।

राशियों के स्वामी

मेष का मंगल स्वामी, यह चर राशि कहाय
प्रश्न समय शुभ स्थिति में, कारज सफल कराय ।

स्थिर राशि शुक्र ग्रह की, वृषभ पड़ा है नाम
साँढ की भांति अड़ जाती, बनता नहीं है काम ।

मिथुन–कन्या बुध की राशि, दोनों हैं द्विस्वभाव
कारज होने न होने से, इनको नहीं लगाव ।

[1] नये तीन ग्रह नेपच्यून, प्लूटो और यूरेनस हैं।
[2] (समूह) राशियों को तीन वर्गों में बांटा गया है- (क) चर (Moveable) (ख) स्थिर (Fixed) (ग) द्विस्वभाव (Double Minded)

चर राशि है चन्द्रमा की, कर्क पड़ा है नाम।
शुभ स्थिति में बैठा इन्दु[1], तुरन्त करा दे काम ।।

रवि है सिंह का स्वामी, स्थिर क्षत्रिय बलवान ।
गुरु-मंगल शुभ होवें तो, मौज करे इन्सान ।।

तुला राशि चर राशि है, भृगु है इसका ईश[2] ।
स्थिर हुई वृश्चिक राशि, मंगल है राशीश[3] ।।

धन-मीन हैं गुरु की राशि, इनके हैं दो रूप[4] ।
अंधियारे में भटकना, या फिर उजली धूप ।।

मकर राशि को चर कहा, कुम्भ स्थिर है विशेष ।
छाया के सुत शनि देव, दोनों के लग्नेश ।।

विशेष :-

मेष वृश्चिक का मंगल, धन औ' मीन का जीव[5] ।
शनि ईश, मकर कुम्भ का, कर्क चन्द्र की नींव ।।

वृष तुला का ईश भृगु[6], सिंह सूर्य की शान।
बुध ईश मिथुन-कन्या का, 'जिब्दल' निश्चय जान ।।

---
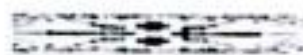
[1] चन्द्रमा, [2] स्वामी या मालिक, [3] राशि का स्वामी अर्थात् मालिक, [4] द्विस्वभाव (Double Minded)
[5] बृहस्पति, [6] शुक्र ।

विशेष – मंगल मेष-वृश्चिक राशि का स्वामी है, धन-मीन राशि का स्वामी बृहस्पति है, मकर-कुम्भ राशि का स्वामी शनि है, चन्द्रमा कर्क राशि का स्वामी है, वृष-तुला राशि का स्वामी शुक्र है, सिंह राशि का स्वामी सूर्य है, मिथुन और कन्या राशि का स्वामी बुध है।

कुण्डली
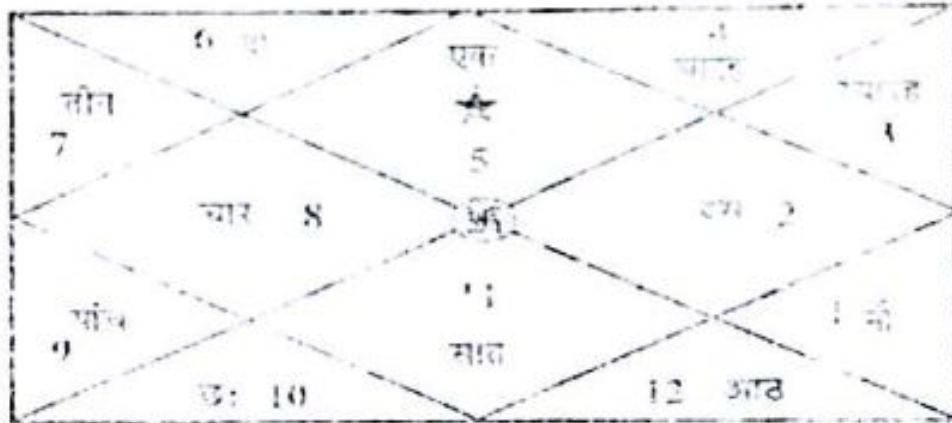
बारह खानों, भावों को, दिया कुण्डली नाम।
ग्रह, राशि के लिखने में, यह आती है काम।।

गोल रूप, चौकोर में, भिन्न भिन्न आकार।
बारह कोष्ठक[1] बन जायें, कुण्डली है तैयार।।

चिह्न★जहां पर अंकित है, भाव सदा वह एक।
राशियां इसमें घूमतीं, मीन, कर्क, सिंह, मेष।।

जन्में शिशु का कुण्डली, भूत-भविष्य दरशाय।
जिसका फल बताये पत्री, वह जातक[2] कहलाय।।

खाना या घर से मतलब, सदा ही होता भाव।
एक से बारह तक है, सबका अलग स्वभाव।।

भाव स्थिर माने जाते, अंक बदलता जाय।
जिस घर में जो राशि है, उसकी ईश कहाय।।

[1] खाना, [2] जिसकी कुण्डली है, वह व्यक्ति

उदाहरण :- जैसे खाना नं. चार में अंक 8 है, 8 अंक (वृश्चिक राशि) का ईश = स्वामी अर्थात् मालिक मंगल होता है अतः भाव चार का स्वामी मंगल हुआ, इसी प्रकार अन्य भावों के ईश बनेंगे।

बारह भाव
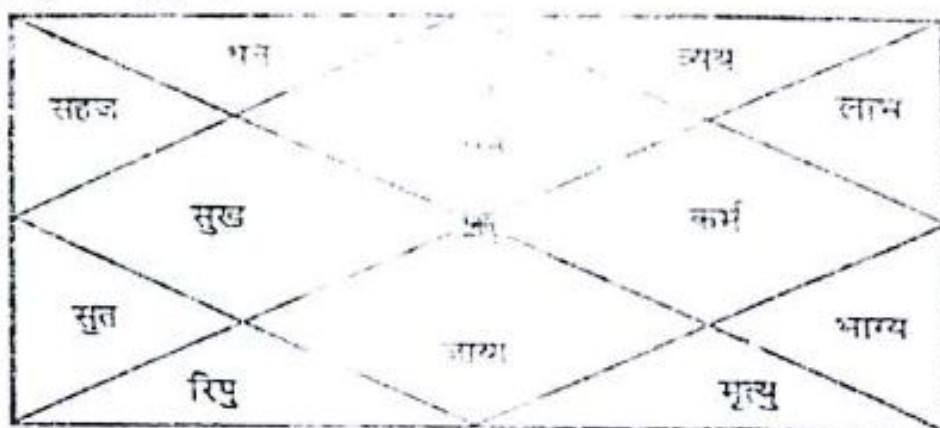
पहिले घर को तन कहें, लग्न भी इसका नाम।
जातक के गुण–विगुण का, वर्णन करे तमाम।।

इसके स्वामी को कहें, जातक का लग्नेश।
लग्न ईश का जातक से, नाता सदा विशेष।।

दूजा घर, धन–कुटुम्ब है, कोष–आँख–आवाज़।
मारक[1] भाव माना जाय, दायें अंग का राज।।

भाई–बहन, घर तीजा, सहज भाव कहलाय।
नौकर अरु दास–दासियां, साहस खूब बढ़ाय।।

माता औ' भूमि का सुख, चतुर्थ भाव दरशाय।
कार – स्कूटर – बंगलादि, मनोरंजन चौपाय[2]।।

पाँचवाँ घर, विद्या – बुद्धि, खाना है औलाद[3]।
पाप ग्रह जब इसमें हों, जातक हो नाशाद[4]।।

[1] मृत्यु देने वाला [2] चार पैर वाले पशु :- घोड़ा-गाय आदि [3] सन्तान [4] दुःखी

छठे भाव का नाम रिपु[1] विपदा कष्ट-क्लेश।
झगड़ा औ' मामा-फूफा, सब इससे ही देख।।

जाया कारक सप्तम घर, पति-पत्नी स्वभाव।
गृहस्थ सुख का द्योतक[2] है, या फिर मारक भाव।।

अष्टम को आयु कहते, मृत्यु पड़ा है नाम।
मृत्यु है अथवा जीवन, यह तो जाने राम।।

नवम घर, भाग्य - रेखा, धर्म-कर्म-तप-योग।
पूर्व जन्म के कर्मों का, जातक भोगे भोग।।

भाव दसवाँ, कर्म-क्षेत्र, पिता और रोजगार[3]।
उच्च आसन आसीन करे, देता है अधिकार।।

आय का स्रोत[4] एकादश, नाम पड़ा है लाभ।
शुभता ही दिखलायेगा, ग्रह आकर इस भाव।।

बारहवाँ घर खर्च है, हानि और नुकसान।
बायीं आँख या कैद घर, फंस जावे इन्सान।।
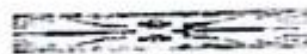
[1] शत्रु [2] सूचक [3] धंधा या नौकरी

विशेष भाव
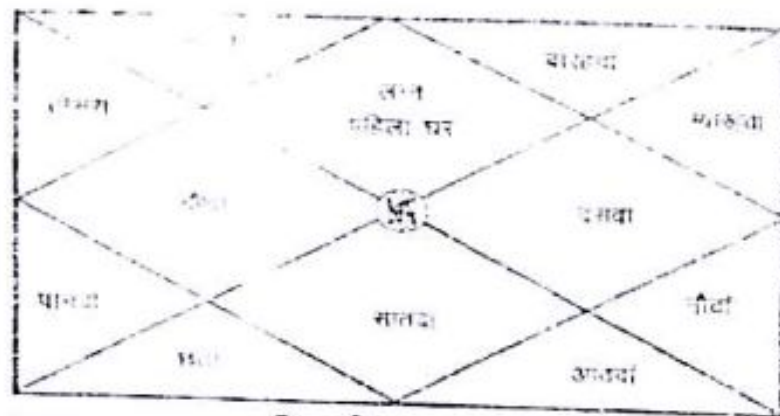
बारह घर कुण्डली में, अलग अलग फलादेश।
पहिले घर को लग्न कहा, स्वामी है लग्नेश।।
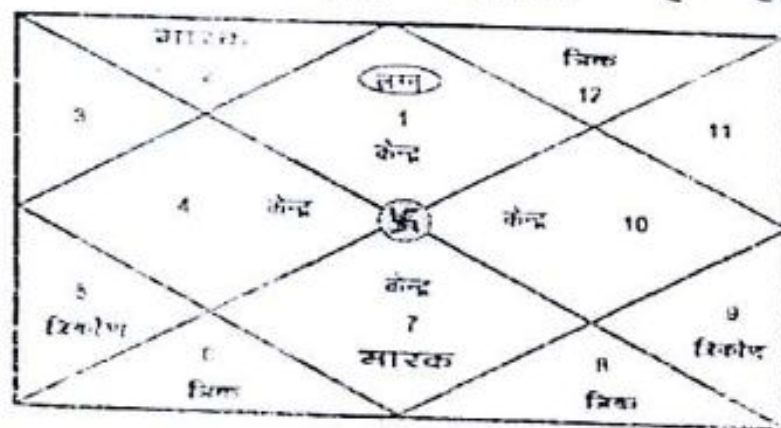
एक-चार-सात-दस को, केन्द्र दिया है नाम।
शुभ भाव माने जाते, ज्योतिष में यह आम।।

पांचवें-नौवें को कहें, ज्योतिर्विद त्रिकोण।
लग्न भी साथ गिनों तो, पूरा हो यह जोन।।

सातवां घर और दूसरा, मारक भाव कहाय।
मारक की महादशा में, जातक कष्ट उठाय।।

छटा- आठवां- बारहवां, दुष्ट यह तीन स्थान।
त्रिक नाम से संबोधित, करें सदा नुकसान।।

1. मेष

मेष लग्न या राशि जिसकी, वह जातक बलवान।
ऊँची छाती, चौड़ा माथा, पुट्ठों में हो जान।।

पुरुष राशि लाल रंग की, अग्नि तत्त्व है मूल।
चर संज्ञक मानी जाती, पूर्व दिशा की धूल[1]।।

जातक के सिर पर बैठी, साहस दे भरपूर।
स्त्री जाति की भेड चतुर, या फिर मंगल क्रूर।।

बात बात में क्रोध करे, लड़ने को तैयार।
एक हाथ माला रखती, दूजे में तलवार।।

सेना नायक कहलाय, खूब करे आदेश।
किन्तु अस्त या नीच न हो, जातक का लग्नेश।।

पुलिस या सेना में होते, अकसर ऐसे लोग।
या फिर डॉक्टर बन जाते, दूर करें जो रोग।।

वीर धीर औ' क्रोधी हो, सुने मतलब की बात।
अपनी ही धुन का पक्का, दे दुश्मन को मात।।

मंगल है इसका स्वामी, अंक है इसका एक।
गुरु दृष्टि इसे बना दे, बहुत भला और नेक।।

---

[1] इस दोहे का मूल भाव है कि यह राशि पुरुष जाति, क्रोधी, चर (Moveable) और इसका निवास स्थान पूर्व दिशा में है।

2. वृष

वृषभ राशि का जातका, हठी क्रोध की खान।
हठ के कारण कर देता, किसी का भी नुकसान।।
शुक्र है स्वामी इसका, दैत्य गुरु भी नाम।
इस राशि का अंक दो है, सोम का उच्च मुकाम।।
वैश्य वर्ण, भूमि गुणी, श्वेत रंग का बैल।
स्थिर-सौम्य, स्त्री लिंगी, जमे न इस पर मैल[1]।।
दक्षिण दिशा की स्वामिनी, चतुर दक्ष प्रवीण।
अपने ही में मस्त रहे, अपने में ही लीन।।
कण्ठ-नली, मुख-आँख पर, है इसका अधिकार।
निज हक के कारण रहती, लड़ने को तैयार।।
बहुत महत्त्वाकांक्षी है, चतुर बहुत कहलाय।
अपने भुजबल पर अकसर, फिरती यह इतराय।।
धन की लोभी होती है, गुण की होवे खान।
भक्त गुरू की बनी रहे, खूब करे अभिमान।।
अच्छा पहने, अच्छा खाय, आधुनिक कहलवाय।
बहुत दूर है सोचती, बढ़े कहां से आय।।
दो दशक पार हुये तब, छः वर्षों के बाद।
मौज करे जातक 'जिन्दल', हो खाना आबाद[2]।।

[1] इस दोहे का मूल भाव है कि यह राशि स्त्री जाति, सरल स्वभाव, स्थिर (Stable) भूमि तत्व और वैश्य वर्ण वाली है, इसका रंग सफेद और स्वभाव बैल (सांड) जैसा है।
[2] इस दोहे का मूल भाव है कि इस जातक के 26 वर्ष के बाद विवाह आदि शुभ कार्य बनने लग जाते हैं

3. मिथुन

मिथुन राशि का जातका, नम्र रहे पर मूढ़।
आजीवन न समझ सके, अर्थ जीवन का गूढ़।।

सब्ज[1] रंग की नर राशि, पश्चिम में है वास।
शुद्र वर्ण, वायु गुणी है, वन में चरती घास।।

द्विस्वभाव रहती सदा, स्थिर नहीं रह पाय।
भरी सभा में आदतवश, निज खिल्ली उड़वाय।।

हँस कर जो भी बोल ले, उसे बता दे राज।
पछताये फिर बाद में, बिगड़ गया जब काज।।

मदन-रति का समावेश[2], स्नेह-प्यार की खान।
दुःख में भी साथ निभाये, अर्पण कर दे जान।।

पर पीड़ा निज की पीड़ा, बड़ों को दे सत्कार।
भक्ति भाव रहता मन में, करती रहे उपकार।।

गृहस्थी में ही मग्न हो, दुःख को जावे भूल।
मन-छेदन कर देता है, धन-अभाव का शूल।।

अभी-अभी गंगा राम थे, अभी हैं जमना दास।
हां में हां, नही में न का, गुर रखते हैं पास[3]।।

बुध बना इसका स्वामी, बाजूबल है विशेष।
वक्षस्थल[4] पर रहती है, दो रंगों का वेश[5]।।

---

[1] हरा [2] भाव काम और रति का मेल [3] दोहे का मूल अर्थ है कि जातक द्विस्वभाव (Double Minded) होता है [4] छाती [5] पहरावा (द्विस्वभाव मन)

4. कर्क

कर्क वाला जातक चंचल, चतुर और बुद्धिमान।
लेकिन इसको हो जाय, कभी-कभी अभिमान।।

चन्द्र है इसका स्वामी, मन परिवर्तन शील।
भारी जैसे गुण भरे, उत्तर दिशा की झील।।

कफ-प्रकृति, रात-बली, हृदय पर अधिकार।
कुशल और महत्त्वाकांक्षी, तेज बहुत रफ्तार।।

बात बात में तर्क करे, स्थिर नहीं रह पाय।
मन-मस्तक में भेद है, कौन इसे समझाय।।

समझ न आवे भेद यह, सौम्य है या क्रूर।
अभी अभी स्नेह जताये, और अभी दे घूर*।।

यूं तो धर्मी-कर्मी हो, आडम्बर से दूर।
अभिमान से हो जाते, सपने चकनाचूर।।

पति औ' पत्नी में यूं तो, रहता बहुत स्नेह।
हर बात पर सहमत हों, इसमें कुछ सन्देह।।

निज जीवन में पा लेते, अकसर यह सम्मान।
क्रोधी जिद्दी होते हैं, यह इनकी पहचान।।

---

* इस दोहे में कृष्ण और शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की स्थिति का वर्णन किया गया है।

5. सिंह

सिंह राशि का नर सदा, मन से रहे कुवेर[1]।
क्षत्रिय वर्ण, बहुत हठीला, ज्यों जंगल का शेर।।

सूरज जैसा तेज भरा, अग्नि तत्त्व है मूल।
क्रोध के वश कर जाता, कभी कभी यह भूल।।

अपनी धुन का पक्का हो, नहीं झुकावे शीश।
आदर्शों का भण्डारी, उच्च कोटी-मनीष।।

स्वाभिमान को ठेस लगे, क्षमा नहीं यह देत।
पर उपकारी होता है, लड़े दीन के हेत।।

भले ही भूखा मर जाये, भिक्षा नहीं कबूल[2]।
स्वाभिमानी न तोड़ेगा, अपने नियम उसूल।।

दयालु होता है दिल से, दिखे मगर यह क्रूर।
आडम्बर-पाखण्डों को, कर दे चकनाचूर।।

तेज बहुत है चेहरे पर, पेट मगर कमजोर।
कद भले ही छोटा है, राजे जैसी तोर।।

धीरज ज्यूँ धरती माता, सहन करे हर चोट।
जिस दिन धीरज टूट गया, टेंटुआ[3] देदे घोंट।।

कार्य कुशल और मेहनती, रहे धीर गम्भीर।
मन-छेदन बन्धु करते, चूभे कलेजे तीर।।

[1] धन का देवता [2] अर्थ है न लेना [3] गला

6. कन्या

कन्या राशि जिसकी होवे, वह धरती सा नेक।
वैश्य वर्ण, बुद्धि वाला, खोवे नहीं विवेक।।

नारी गुण, दो मन वाला[1], दक्षिण दिशा से नेह।
गर्मी की ऋतु में बरसे, धीमा धीमा मेह।।

नम्र और भावुक होता, शंका इसमें नांहि।
बत्तीस वर्ष स्थिर न होवे, अपने जीवन मांहि।।

गर्व बहुत था आदर्शों का, निज बल पर विश्वास।
कलियुग की माया 'जिन्दल', शेर खा गया घास।।

धर्म कर्म करने वाला, आडम्बर से दूर।
नाच रहा है किन्तु बेवस, जैसे नचावे हूर[2]।।

भले बुरे को समझे नांहि, यह भोला इन्सान।
दो पाटों के बीच पीसे[3], पत्थर और कुछ धान।।

परोपकारी होता है, मन में नहीं है पाप।
लाभ कहां देगा 'जिन्दल', व्यर्थक वार्तालाप।।

बैंक-बीमा और अध्यापन, टंकन[4] बुक व्यवसाय।
कर विभाग, डाक-तार को, अकसर यह अपनाय।।

[1] द्विस्वभाव (Double Minded) [2] अप्सरा (सुन्दर पत्नी) [3] भाव-द्विस्वभाव (Double Minded) के कारण संघर्ष अधिक [4] मुद्रण (टाईप/छपाई आदि)

7. तुला

तुला राशि का जातका, न्यायप्रिय विद्वान।
चोट लगे जब अहम् को, जाग उठे अभिमान।।

शुक्र है स्वामी इसका, रहा तराजू तोल।
शूद्र जाति का नर कहे, कड़वे मीठे बोल।।

आदर्शवादी धर्मी हो, ईश्वर पर विश्वास।
भला नुमाइश क्यों करे, धीर गम्भीर उदास।।

तर्कशील हठ का पक्का, दे दुश्मन को मात।
श्रेष्ठ सदा ही मानता, अपना धर्म औ' जात।।

शान्ति प्रिय सन्तोषी हो, प्रभु पर छोड़े डोर।
विद्या-बुद्धि धन-सम्पदा, चुरा सके नाँ चोर।।

कर्म गति की मार कहें, या इसका ही कसूर।
न पा सकी लक्ष्य लोमड़ी, खट्टे हुये अंगूर[1]।।

कवि हृदय सादा जीवन, आडम्बर से दूर।
धन अभाव के कारण हों, सपने चकनाचूर।।

आदर्शों की मान्यता है, भले न इनको मेट।
किन्तु केवल आदर्शों से, भरता नहीं है पेट।।

[1] इस दोहे का मूल भाव है कि जातक भाग्य की विडम्बना या स्वयं के गलत निर्णय के कारण अपने लक्ष्य को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पाता।

8. वृश्चिक

वृश्चिक राशि का प्राणी, हठी दम्भ[1] की खान।
मंगल इसका ईश है, गुण बिच्छू के जान।।

उत्तर दिशा में घूमती, जल में करे निवास।
स्त्री लिंगी, वर्ण ब्राह्मण, मनवा उजली कपास।।

उजले मन पर मैल जमे, क्रूर बने या पाप।
डंक मारता कब बिच्छू, किसी को अपने आप।।

बुद्धिमान होवे जातक, ज्यों पण्डित गुणवान।
धर्म कर्म करता रहता, माया का भी मान।।

युवावस्था में प्राणी, भूल गया भगवान।
बाढ़ खेत को खा गई, खेत हुआ वीरान।।

सत्य भाषी दयालु हो, मन में नहीं है पाप।
सूर्य भौम की उष्मा[2] ने, चढ़ा दिया है ताप[3]।।

मात-पिता का भक्त हो, भृगु[4] इसे भटकाय।
युवावस्था में इस को, हरा नजर ही आय।।

वाक्पटु[5] और चतुर हो, करे बहुत अभिमान।
रक्षक-बन्धु-व्याघ्र[6] की, नहीं इसे पहचान।।

---

[1] अभिमान, [2] भाप (गर्म हवा), [3] बुखार- ज्वर (क्रोध), [4] शुक्र (भाव स्त्री),
[5] अधिक बातें करने वाला, [6] व्याघ्र - भेड़िया (शत्रु)

९. धन

धन राशि का जातक रखे, हाथ में तीर कमान।
चतुर क्षत्री गुण ग्राही, ज्यों अग्नि का बाण।।

देव गुरु इसके स्वामी, स्वर्ण रंग सी देह।
धर्म-कर्म भी करता है, पैसे से भी नेह।।

पूर्व दिशा में विचरती, मधुमास से प्यार।
दो पैरों पर दौड़ती, तेज गति की कार।।

नीति अनीति क्या होती, क्या होय व्यवहार।
इस से बेहतर न जाने, है यह मधुर कटार।।

नम्र लगे ज्यों धरती है, झुक कर शीश नवाय।
लोहा कब झुकता 'जिन्दल', टूट भले ही जाय।।

बहुत महत्त्वाकांक्षी हो, बहुत सोचता दूर।
चाटुकारिता[1] गुण ग्राही, आदत से मजबूर।।

गुरु देव की प्रथम राशि[2], गुरु है मूल में नेक।
नहीं छोड़ता कठिन समय, धीरज और विवेक।।

गुरु पड़ा हो शुभ स्थिति में, फल देगा अनुकूल।
विष में अमृत घुल जाय, आम न होय बबूल[3]।।

[1] चापलूसी, [2] धन राशि, [3] एक काटेदार वृक्ष

10. मकर

मकर राशि का जातका, चतुर बहुत होश्यार।
पिंगला नारी सा वनिया, खूब करे व्यापार।।

मकर राशि का ईश शनि, दक्षिण दिशा में वास।
शिशिर में ठिठुरी भूमि, पाला पड़ी सी घास।।

पाखण्डी घड़ियाल[1] की, गहरे पानी पैठ।
अपना मतलब ही साधे, जहाँ गया यह बैठ।।

आदर्शों की बात करे, बहुत जतावे नेह।
कम संभावना है 'जिन्दल', जेठ में बरसे मेह।।

पति-पत्नी में तर्क रहे, माया करती प्यार।
माया ही ईश 'जिन्दल', माया ही सरकार।।

तीन दशक छः वर्ष तक[2], नहीं जमेंगे पैर।
कलियुग में दैत्य गुरु[3] से, कष्ट ही देगा वैर।।

अधिवक्ता[4], लोहा धातु, शनि के हैं व्यवसाय।
तेल मशीन चमड़ा आदि, खूब बढ़ावें आय।।

मनन ग्रन्थों का करे, बहुत बढ़ावे ज्ञान।
लोग समझते हैं इसे, दूर-दर्शी विद्वान।।

[1] मगरमच्छ, [2] 36 वर्ष तक, [3] दैत्य गुरु = राक्षसों का गुरु (शुक्र), [4] वकील

11. कुम्भ

कुम्भ राशि वाला जातक, शीतल शांत सा नीर।
धीरज प्याला जब छलके, फिर तीक्ष्ण ज्यों तीर।।

शूद्र जाति नर गुण वाली, शनि इसका लग्नेश।
वायु तत्त्व अर्द्ध जली है[1], घुटनों पर है विशेष।।

भाग्य नैया डोल रही, बीच फँसी मझधार।
जाने कब भाग्य जागे, कब हो बेड़ा पार।।

कार्य कुशल होय जातक, गृहस्थी में ही लीन।
सुख सम्पदा मिल भी जाय, दीन तो आखिर दीन।।

सूखा कोरा घट पी गया, ठण्डे जल की घूंट।
पावस[2] में हरा हुआ न, बद नसीब यह ठूंठ[3]।।

बहुत करे मेहनत प्राणी, बहुत चलावे हाथ।
पर नतीजा वही रहे, तीन ढाक के पात।।

मरहम जैसा काम दे, शमन[4] करे पर पीड़।
लेकिन धोखा दे गई, खुद अपनी ही रीढ़।।

धन से मोह नहीं किन्तु, छोड़ा भी नहीं जाय।
भले बुरे में भेद 'जिन्दल', ज्ञानी ही कर पाय।।

[1] भाव-जल वायु का मिश्रण, [2] बरसात [3] सूखी लकड़ी का बड़ा टुकड़ा, [4] शान्त

12. मीन

मीन राशि का जातका, दयालु औ' धनवान।
गुरु देव की कृपा से, मौज करे इनसान।।

ब्राह्मण जाति जल गुणी, दो मन वाली नार।
उत्तर दिशा में धूप खिली, छाई बसन्त बहार।।

सूरज जैसा प्रतापी, पाय बहुत सम्मान।
सदा सहाई मानता, अपना इष्ट भगवान।।

ज्ञानी अरु दानी होता, करता बहुत उपकार।
बच्चे-बुढे, गुरुजन का, सदा करे सत्कार।।

मीठी वाणी बोलता, कुल का दीप कहाय।
बहुत गुणों की खान हो, उन्नत हो व्यवसाय।।

शीतल जल की बावड़ी, या फिर उबली भाप।
क्रोध कहां देख सकेगा, भाई-बहन औ' बाप।।

एक सरोवर दो मछली, एक दुष्ट इक नेक।
एक फँसी माया कांटे, पुण्य कमावे एक।।

पण्डित होवे गुण वाला, नीयत नहीं खराब।
दैत्य गुरु है आठवां[1], पीना नहीं शराब।।

[1] इस दोहे का मूल भाव यह है कि यदि जातक शराब आदि का सेवन न करे तो उत्तम है अन्यथा अष्टमेश गुरु हानि देगा।

सूर्य

★

रवि आत्मा का स्वामी , पुरुष क्षत्री बलवान ।
पिता–कारक माना है, राजा यह श्रीमान।।

सिंह राशि का स्वामी है, स्थिर उग्र नभ बीच ।
उच्च मेष के दस अंश, तुला में होय नीच।।

मध्याह्न बली रहेगा, स्वर्ण रंग सी देह।
गुरु–चन्द्र–मंगल से है, इसका अधिक स्नेह।।

सातवें घर पूर्ण दृष्टि, बाकी सब कमजोर।
पश्चिम में जा डूबता, पूर्व दिशा में भोर।।

राहु–शुक्र शत्रु इसके, शनि से भी टकराव।
बुध बेचारा साथ है, झेल सके कब ताव।।

छः वर्ष की महादशा, पाराशर – अनुसार[1] ।
कृत्तिका, उ–फाग,–षाढ़ा[2], तारे है क्रमवार।।

शुभ स्थिति में बैठा भानु, देता है अधिकार ।
गुणी – ज्ञानी – प्रतापी , गर्व करे सरकार।।

[1] पाराशरी दशा 120 वर्ष के अनुसार, [2] उ-फाग= उत्तरा फाल्गुनी, षाढ़ा = उत्तरा षाढ़ा

ॐ

चन्द्र

★

चन्द्र है मां का कारक, नाम शशि और सोम ।
पत्थर जैसा मन इसका, कभी कभी है मोम ।।

वैश्य वर्ण माना ज़ाये, जल में करे निवास ।
चांदी सी सुन्दर काया, उजला श्वेत लिवास ।।

कर्क राशि का ईश है, वृष में उच्च हो जाय ।
वृश्चिक–तीन अंश तक, नीच नमन कहलाय ।।

सूर्य इसका सुमित्र है, बुध से करे स्नेह ।
राहु ग्रहण लगा देता, ढक देता है देह।।

मंगल औ शनि से इसका, सम रहता व्यवहार ।
इसकी राशि में आकर, करते ये तकरार।।

शुक्र शत्रु माने इसे, पर यह करे विचार ।
इसकी राशि में होवे, उच्च मेरा संचार ।।

सातवें घर पूर्ण देखे, सत्त्व गुणी कहलाय ।
घटता बढ़ता रहता है, स्थिर नहीं रह पाय ।।

हस्त–श्रवण–रोहिणी तारा[1], जन्म समय जब आय ।
एक दशक[2] की भुक्त भोग्य, चन्द्र दशा दरशाय ।।

---

[1] नक्षत्र, [2] 10 वर्ष

मंगल

★

मंगल को भाई माना, क्रूर क्षत्री बलवान ।
सात वर्ष की महादशा, शत–बीस[1] में श्रीमान।।

मेष वृश्चिक का स्वामी, है युवा दक्षिणाधीश ।
अग्नि जैसी लाली दमके, झुक जाता है शीश।।

मकर राशि में उन्नत हो, अठाइ अंश के बीच ।
कर्क के इन्हीं अंश में, माना जाय नीच।।

सातवें चौथे आठवें, पूर्ण दृष्टि दरशाये।
मित्र शत्रु सम राशि में, अपना बल दिखलाय।।

सूर्य गुरू बन्धु माने, भृगु से सम व्यवहार ।
सोमज[2] राहु ज़ब देखें, करे सदा तकरार।।

शूरवीरता का कारक, दे दुश्मन को मात ।
दृढ निश्चयी आज्ञाकारी, सुने मतलब की बात ।।

सोने जैसा तांबा है, अंगारे सा लाल ।
युद्ध देवता कहलाता, रण में करे कमाल।।

यदि हो लग्नेश/कारक, शुभ मंगल कहलाय ।
अशुभ अकारक स्थिति में, बद मंगल बन जाय।।

---

[1] 120 वर्ष, [2] बुध

बुध

★

बुध मामा मौसी कारक, शशि नन्दन है नाम ।
सोमज भी कहते इसको, करे बुद्धि से काम।।
मिथुन-कन्या का ईश है, शूद्र वर्ण है मूल।
शुभ बैठे तो गणित में, करता कभी न भूल।।
कन्या के पन्द्रह अंश तक, उच्च रहता हमेश ।
मीन राशि नीच कही है, अंश वही हैं विशेष।।
सातवें घर पूर्ण देखे, उत्तर दिशा से प्यार ।
डाक-बैंक-कर-अध्यापन, इसके मुख्य व्यापार।।
राहु-भृगु को बन्धु माने, सूर्य से भी प्यार ।
भोम-मन्द-गुरु सम समझे, शशि से है तकरार।।
सत्रह वर्ष की महादशा, विंशोत्तरी में लीन' ।
श्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, इसके तारे तीन।।
रंग हरा इसको प्यारा, पन्ना इसकी जान ।
मात भवानी शारदा, दे इसको वरदान।।
माना जाय यह नपुंसक, कांस्य धातु सी देह ।
भृगु राहु संग सदा ही, इसका अधिक स्नेह।।
ज्योतिष विद्या भी जाने, तारा का युवराज ।
वाणी में रस घोलता, मधुर रसीला साज।।

' 120 वर्ष की महादशा के अनुसार

ॐ

बृहस्पति

★

देव गुरु शुभ के स्वामी, ज्ञान गुणों की खान ।
उच्च कोटि के पण्डित हैं, दयालु और विद्वान ।
सोने सी सुन्दर काया, पीत रंग परिधान[1] ।
अमृत वाणी बरस रही, यह इनकी पहचान ।।

धन मीन के स्वामी है, उच्च राशि है कर्क ।
ढोंगी औ' पाखण्डी का, काम न आवे तर्क ।।

दिव्य दृष्टि रखते हैं, लें भूत – भविष्य जान ।
सोलह वर्ष की कुलदशा, इनकी है श्री मान ।।

पुनर्वसु या पूर्वा भाद्र, नक्षत्र विशाखा जान ।
महादशा है गुरु देव की, 'जिन्दल' निश्चय मान ।।

इन्द्र सभा में पूजा हो, देव गणों के बीच ।
इनकी गरिमा ऊँची है, कमल ज्यों ऊपर कीच ।।

शनि देव की पहली राशि, मकर है जिसका नाम ।
पांच अंश तक नीच रहे, इन पर यह इलजाम[2] ।।

परम मित्र इसका भानु, भौम-शशी भी साथ ।
सदा खटकती रहती है, दैत्य गुरू की बात ।।

सोमज को शत्रु माने, शनि से सम व्यवहार ।
राहु के प्रति सहज हैं, वह करता तकरार ।।

पांचवें-नौवें-सातवें, देख रहे गुरु देव ।
निज बन्धु को बांट रहे, आम व मीठे सेब ।।

[1] पहराना, [2] अभियोग/अपराध-भाव दोष

शुक्र

★

सुन्दरता का कारक है, चांदी जैसा शरीर ।
मनमोहक बहुत रसीला, जैसे मीठी खीर ।।

विप्र वर्ण, राजस गुणी, ब्राह्मण है यह नेक ।
मृत संजीवनी जानता, यही नभग है एक।।

स्वामी है वृष – तुला का, उच्च राशि है मीन ।
सताई अंश कन्या में, माना जावे हीन[1]।।

सातवें घर दृष्टि डाले, स्त्री भाव है मूल ।
शुभ स्थिति में बैठा हो, वाहन सुख अनुकूल ।।

बीस वर्ष की महादशा, श्वेत रंग का वेश ।
दैत्य गुरु माना जाय, यूं तो है दरवेश[2]।।

पू–फाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा, या फिर भरणी देख ।
महादशा इसकी होगी, यह पत्थर में मेख।।

बुध–शनि को बन्धु समझे, राहु संग है प्यार ।
सूर्य और चन्द्रमा से, लड़ने को तैयार।।

मंगल को सम ही माने, न झगड़ा न तकरार ।
देव गुरू का भी करता, अकसर यह सत्कार।।

उच्च कोटि का शायर[3] है, रस बरसे श्रृंगार ।
मयूरी नाचे जंगल में, छाई बसन्त बहार।।

---

[1] कमज़ोर भाव नीच [2] फ़कीर-संत, [3] कवि

शनि

★

छाया-सुत शनि देव से, डरता हर इनसान ।
तीक्ष्ण क्रोधित दृष्टि है, भला करें भगवान ।।

मकर - कुम्भ का ईश है, शूद्र, पश्चिमाधीश ।
बारह राशि भ्रमण को, वर्ष लगा दे तीस ।।

नील वर्ण तामस गुणी, शिशिर वायु का वेग ।
जातक के सिर पर धरे, दो धारों की तेग[1] ।।

तुला के बीस अंश तक, उन्नत यह कहलाय ।
मेष की इन्हीं अंशों पर, नीच नमन हो जाय ।।

राहु-भृगु-सोमज, तीनों, सदा सहायक पाय ।
देव गुरु को सम माने, मंगल से टकराय ।।

चन्द्र को रिपु मानता, सूरज से तकरार ।
मेहरबाँ[2] जिस पर होवे, उसके बेड़े पार।।

उ.भाद्रा पुष्य, अनुराधा, जन्म समय जब आय ।
उन्नी[3] वर्ष महादशा की, यह चक्की चलवाय।।

पूर्ण दृष्टि से देखता, तीन-दशम घर सात ।
बन्धु को नेह बांटता, दुश्मन को दे लात।।

[1] तलवार, [2] दयालु, [3] उन्नीस (19)

ॐ

राहु

पृथक्वादिता का कारक, बहुत ही है वाचाल ।
अठारह वर्ष की दशा में, लाता रहे भूचाल।।

धूम्र वर्ण तामस गुणी, माना जाय निषाद[1] ।
इसके हिस्से में आय, झगड़ा और विवाद ।।

राजनीति में कुशल है, पुरुष जाति का पीर[2] ।
बहुत चतुर मायावी है, बात करे गम्भीर।।

कन्या इसकी निज राशि, पूर्ण दृष्टि घर सात ।
पांचवें नौवें भी देखे, लोग कहे यह बात।।

मिथुन राशि में उन्नत है, धन में होवे नीच ।
कहीं–कहीं अपवाद मिले, वृष–वृश्चिक के बीच।।

आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा, जब हो इनमें सोम[3] ।
महादशा राहु की है, निकल गया है भोम।।

बुध–शनि– अरु शुक्र इसके, परम मित्र हैं तीन ।
शशि–रवि और मंगल को, सदा मानता हीन[4]।।

पापी राहु नहीं माने, देव गुरु की बात ।
कटा अंग केतु इसका, सदा रहे वह सात।।

वक्र अवस्था में घूमें, सदा ही रहता अस्त ।
वार कटारी सा करता, बिना पैर अरु हस्त।।

[1] एक अनार्य जाति, [2] भाव-चालाक, [3] चन्द्रमा, [4] कमजोर भाव-शत्रु

केतु

★

राहु का कटा अंग है, केतु जिसका नाम ।
जिस राशि में बैठेगा, करे उसी का काम।।

मीन इसकी अपनी राशि, धन में हो बलवान[1] ।
मिथुन राशि में नीच है, पन्द्रह अंश है मान।।

बिना शीश का तारा है, नैऋत्य में लोप[2] ।
राहु सातवें बैठा है, करे कहां पर कोप।।

न बैरी न कोई प्यारा, न पापी नांहि नेक ।
न मूर्ख न अज्ञानी है, और न बहुत विवेक।।

मघा, मूला अरु अश्विनी, इसके तारे तीन ।
सात वर्ष महादशा की, बज जाती है बीन।।

पूर्ण दृष्टि राहु जैसी, मानी जावे सात ।
पांचवी-नौवीं भी पूर्ण, लोग कहें यह बात।।

भौम-राहु के गुण इसमें, विविध रंग की धूल ।
शुभ हुआ तो फूल बिछाये, अशुभ हुआ तो शूल।।

भले बुरे का मर्म नही, सोचे नहीं विशेष ।
जिस के घर में बैठेगा, सुने उसका संदेश।।

[1] ताकतवर भाव उच्च, [2] भाव- पश्चिम दक्षिण का कोण इसकी दिशा है.

उच्च राशियाँ

उच्च राशि, अर्थ उन्नत, ग्रह बैठा बलवान ।
राज सिंहासन बिराजे, जैसे कोई इनसान।।

सामर्थ वह माना जाय, उसे पूर्ण अधिकार ।
चार कर दे बराबर, दो को करदे चार।।

मेष का अंक एक है, सूरज उच्च विशेष ।
तेजस दमक रहा नभ में, आभा का परिवेश[1] ।।

दो नम्बर है वृषभ का, शशि यहां बलवान ।
तीन अंश तक उच्च रहे, रजनीकर[2] श्रीमान।।

कर्क राशि चन्द्रमा की, इसका अंक है चार ।
गुरु इसमें उन्नत होय, पांच अंश का भार।।

छः नम्बर कन्या राशि, सोमज का घर वार ।
पन्द्रह अंश तक होता, बुध का उच्च संचार।।

तुला राशि दैत्य गुरु की, अंक है इसका सात ।
शनि देव की उच्च राशि, बीस अंश की बात।।

मकर राशि शनि देव की, यह दसवां सोपान[3] ।
अठाई अंश तक भौम है, उन्नत अरु बलवान।।

मीन राशि अंश सताई, भृगु का उच्च निवास ।
गुरु देव इसके स्वामी, है बारहवीं राशि।।

[1] आभा सीमा का घेरा, [2] चन्द्रमा, [3] सीढ़ी भाव दसवी राशि

नीच राशियाँ

नीच का अर्थ गिरावट, अधम पाप औ' दीन ।
निर्बल या नमन रहे वह, बल से अपने हीन।।

करनी–भरनी है 'जिन्दल', सब कर्मों का खेल ।
सिंहासन के बदले ग्रह, भुक्त रहा है जेल।।

बीस अंश तक मेष में, शनि माना है नीच ।
मंगल शनि घर उच्च है, पड़ी इसी को छीक।।

तुला राशि दैत्य गुरु की, सूर्य यहाँ कमजोर ।
नीच नमन माना जाता, दस अंशों की डोर।।

कर्क चन्द्र की चर राशि, ठाई[1] अंश की बाट ।
महाबली मंगल डूबा, नीच कहावे जाट।।

वृश्चिक राशि मंगल की, सोम है इसमें नीच ।
तीन अंश तक पानी है, शेष भरा है कीच।।

मकर के पांच अंश तक, गुरु नमन और हीन ।
बहत दुःखी व्याकुल रहता, ज्यों पानी बिन मीन।

गुरु देव की अन्तिम राशि, मीन है जिसका नाम ।
नीच होता सोमज इसमें, पन्द्रह अंश परिणाम।।

बुध भृगु का परम बन्धु है, अजब है इसमें भेद ।
कन्या राशि में भृगु नमन, होवें सताइस छेद[2]।।

[1] अठाईस(28). [2] भाव 27 अंश तक नीच

विशेष

मिथुन राशि उन्नत राहु, पन्द्रह अंश का मान ।
कुछ आचार्य कहते हैं, वृष में यह बलवान।।
धनु में केतु उच्च होता, अंश राहु सम जान ।
वृश्चिक में यह उन्नत हो, ऐसा भी अनुमान।।
एक उच्च तो नीच है दूजा, अजब विरोधाभास ।
पाप–पुण्य में जो बचा, शेष तुम्हारे पास।।
स्वराशि है अपनी राशि, अपना ग्रह निवास ।
निज राशि में ग्रह बैठे, लेवे सुख की सांस।।
अपने घर जो सुख मिलता, कहां मिले परदेश ।
भूखा प्यासा भी होवे, सो जावे दरवेश।।
मित्र घर में बैठा ग्रह, हर्षित माना जाय ।
बुरे समय में सुबन्धु ही, काम बन्धु के आय।।
शत्रु घर बैठे खग[1] को, कष्ट रहे दिन रैन ।
भय अरु चिन्ता बनी रहे, नहीं मिलेगा चैन।।
अस्त पड़े जो ग्रह 'जिन्दल', वह ऋणि बेजार[2]।
पूर्व जन्म में सुप्त था, आज हुआ बेकार।।
वक्री ग्रह विचलित रहे, भूतकाल तड़पाय।
पूर्व जन्म के मोह का, बन्धन छूट न पाय।।

[1] पक्षी भाव आकाश मे घूमने वाला ग्रह, [2] दुखी- भाव तंग

नक्षत्र

★

बारह राशि बारह घर, नौ ग्रहों का खेल ।
बीस पे सात कुल तारे[1], अभिजित्[2] के बिन मेल।।

नक्षत्र भी कहते इन्हें, योनि–नाड़ी को जान ।
ज्योतिर्विद को हो जाय, महादशा का ज्ञान।।

हर एक के चार चरण हैं, शब्द करावे भेद ।
एक राशि में नौ अक्षर, अभिजित् करता छेद।।

[1] मात्र सत्ताईस नक्षत्र [2] अठाईसवां नक्षत्र

1. अश्विनी

अश्विनी पहिला तारा, दशा केतु दरशाय ।
चु–चे–लो–ला अक्षर इसमें, मेष राशि कहलाय।।
अश्व योनि आदि नाड़ी, गण है इसका देव ।
दोष लगे गंडमूल का, जातक को स्वयंमेव।।
लोचन माना मन्द है, पर घोड़े से तेज ।
आजादी से घूमता, दक्षिण दिशा में सेज।।
निज स्वामी का भक्त हो, शूरवीर गुणवान ।
हठी और अड़ियल घोड़ा, चौकस रक्खे कान।।
मति मन्द होती इसकी, या अनिन्द्रा सा रोग ।
अर्द्ध अंग में वायु है, व्यर्थ भ्रमण का योग।।

2. भरणी

दूजा तारा भरणी है, भृगु दशा का नाथ ।
राशि मेष ही कहलाय, सत्य कहुं यह बात।।
ली–लू–ले–लो अक्षर हैं, जातक की पहचान[1] ।
मध्य नाड़ी गण मानव, योनि गज प्रमाण।।
हृष्ट पुष्ट रहता जातक, कम ही पड़े बीमार ।
आलस्य वृद्धि सम्भव है, या फिर तेज बुखार।।

[1] भाव जातक का नाम ली-लू-ले-लो अक्षरो पर निकलता है।

धनी सुखी पराक्रमी, नेत्र मध्य सुजान[1]।
मन्द-मन्द चलता किन्तु, बहुत रहे बलवान।।

वैश्य भोजन आहारी, नहीं किसी से बैर ।
धीरज बांध जब टूटे, नहीं किसी की खैर।।

3. कृत्तिका

कृत्तिका होता तीसरा, सूर्य दशा का काल[1]।
मेष वृष राशि में बटकर, श्वेत हुआ है लाल।।

अ-ई-उ-ए नाम के अक्षर, ज्योतिर्विद बताय ।
इसमें केवल अ अक्षर ही, मेष राशि में आय।।

गण राक्षस नाड़ी अन्त्य, योनि इसकी मेष ।
उत्तर दिशा में घूमती, करती बहुत क्लेश।।

कोमल पत्ते चरती है, चतुर चपल यह भेड़ ।
पौधे को ही खा जाय, पनप सके कब पेड़।।

चोरी या सीना जोरी, कर्म करादे नीच ।
बीच भँवर फसा प्राणी, दो नावों के बीच।।

[1] चतुर तिरछा भाव दृष्टि से भांपने वाला [2] समय - भाव सूर्य की महादशा

4. रोहिणी

रोहिणी का अंक चौथा, वृषभ राशि का मान ।
चन्द्र दशा का भुक्त–भोग, यह तू निश्चय जान।।

ओ–व–वी–बू नाम वृष, जन्म राशि कहलाय ।
चन्द्रमा इसकी परिधि[1] में, बहुत हठी हो जाय।।

नाड़ी इसकी अन्त्य है, गण मनुष्य तू जान ।
सर्प योनि से आया है, बहुत करे अभिमान।।

कान नहीं पर चौकना, सदा रहे होशियार ।
निज शत्रु पर फुंकारे, मारे गहरी मार।।

नीति अनीति क्या होती, क्या होता व्यवहार ।
रण भूमि में सब चलती, जैसी मिले कटार।।

5. मृगशिरा

वृष–मिथुन के मध्य पड़े, मृगशिर तारा पाँच ।
ज्ञानी जन करते इससे, भौम दशा की जाँच।।

नाम अक्षर वे–वो–क–की, गण है इसका देव ।
सर्प योनि मध्य नाड़ी, दो रंगों का सेब[2]।।

सुन्दर मुख आंखें मन्दी, हिरणी जैसी चाल ।
कभी उग्र कभी सौम्य, ज्यों नन्हा सा बाल।।

---

[1] केतु भाव वृष राशि में, [2] भाव कभी कभी दुविधा रहती है।

ॐ

मेहरबान तो लुटा दे, धन दौलत अरु जान ।
वक्त फिरा तो प्राणी, नहीं रहा पहचान ।।

मन से कोमल होता है, दिखता बहुत कठोर ।
क्या इसे समझाओगे, ढोर तो आखिर ढोर[1] ।।

6. आर्द्रा

आर्द्रा तारा बतलाता, मिथुन राशि की चाल ।
इसके अन्तर्गत आता, राहु दशा का काल ।।

कु–घ–ङ–छ यह चारों वर्ण[2], इस तारे को ठीक ।
मिथुन राशि राहु दशा है, यह पत्थर पर लीक ।।

नाड़ी आदि गण मानव, योनि इसकी श्वान[3] ।
मृग के पीछे दौड़ रहा, इक भूखा इनसान ।।

पाप–पुण्य का मर्म नहीं, रण नीति प्रवीण ।
कभी लाखों में खेलता, कभी दिखेगा दीन ।।

उपकारों को क्या माने, क्रोधी अरु वाचाल[4] ।
जिसमें इसको लाभ दिखे, वही चलेगा चाल ।।

---

[1] पशु भाव कम समझ, [2] अक्षर, [3] कुत्ता, [4] भाव बहुत बोलने वाला या झूठ बोलने वाला

7. पुनर्वसु

सातवां नम्बर पुनर्वसु, जीव[1] दशा बतलाय ।
के–को–ह राशि मिथुन है, पर हि कर्क में जाय।।

आदि नाड़ी गण है देव, योनि है मार्जार[2] ।
मूषक देखे झपट पड़े, यह बिल्ली होशियार।।

इसमें जन्मा जातक हो, शान्त सुखी औ' नेक।
उच्च वाहन भवन सुन्दर, खावे मिठे केक[3]।।

वाक्पटु धीरज वाला, समय को दे अधिमान ।
उचित समय न चूकता, यही इसकी पहचान।।

धर्म कर्म भी करता है, माया से भी प्यार ।
जंगल जंगल भटक रहा, या फिर वाहन कार।।

8. पुष्य

आठवां नम्बर पुष्य का, बहुत पावे सम्मान ।
कर्क राशि में जन्म हुआ, दशा मंद[4] की जान।।

नाम का पहिला अक्षर, हु–हे–हो–ड जब होय ।
बचना हो तो कुम्भ पर, नाम न धरियो कोय।।

धनी धर्मी विद्वान हो, इसमें नही सन्देह ।
शान्त चित अरु सुखी हो, सुन्दर होगी देह।।

---

[1] बृहस्पति, [2] बिलाव, [3] एक व्यंजन भाव हर तरफ से शुभ फल प्राप्ति, [4] शनि

योनि इसकी मेष बने, नाड़ी मध्य गण देव ।
शुभ मुहूर्तों में गणना, शंका करियो न केव[1] ।।

तेज बहुत और चतुर है, तर्क करे गम्भीर ।
टूट भले ही जायेगा, नहीं झुकेगा वीर।।

9. आश्लेषा

आश्लेषा नौवां नक्षत्र, गंडमूल का दोष ।
महादशा सोमज की हो, कर्क राशि का जोश।।

डी–डू–डे–डो नाम ही, रखते हैं विद्वान ।
बुध दशा का हो जाता, ज्योतिषी को ज्ञान।।

राक्षस गण नाड़ी अन्त्य , योनि बनती बिडाल ।
ताक में बैठी है बिल्ली, चूहा फँस गया जाल ।।

इसमें जन्मा जातक हो, दयालु और विद्वान ।
आदर्शों का भण्डारी, सत्य को दे अधिमान।।

मन का राजा उपकारी, कर्मों पर विश्वास ।
सेवा ही रहती मन में, हो दासों का दास।।

यह गुण तब ही पनपेंगे, शान्त करावे दोष[2] ।
अथवा गुण अवगुण होंगे, खाली करदे कोष।।

---

[1] भाव कोई किसी प्रकार की शंका, [2] भाव गण्डमूल की शांति.

ॐ

10. मघा

बालक जन्में मघा में, यह दसवां सोपान।
दोष लगे गंडमूल का, 'जिन्दल' निश्चय जान।।
अक्षर इसमें म-मी-मू-मे, दशा केतु की देख।
सिंह राशि में जन्म हुआ, यह पत्थर में मेख।।
राक्षस गण मूषक योनि, अन्त्य नाड़ी में प्राण।
डर के मारे कांप रहा, बिल्ली से इन्सान।।
क्रोधी पर पितृ भक्त हो, बहुत धीर गम्भीर।
उपकारी मन का राजा, पेट में चुभते तीर[1]।।
पराक्रमी बहुत बहादुर, पर आलस्य के हेत।
पांव पसार के बैठा है, चिड़ियां चुग गई खेत।।

11. पूर्वा फाल्गुणी

पू.फा. ग्यारवां तारा, मानते हैं विद्वान।
सिंह राशि पर नाम पड़े, मो-टा-टी-टू जान।।
शुक्र दशा में जन्मे जातक, वर्ष है जिसके बीस।
मध्य नाड़ी मानव गण, उच्च कोटि का मनीष।।
योनि इसकी मूषक है, सुन्दर लोचन गाय।
धनी मानी ज्ञानी हो, जीवन में सुख पाय।।

[1] पेट में तकलीफ

गाय जैसा नम्र प्राणी, कम ही करता रोष।
मार पड़ी क्यों इसको, क्या था इसका दोष।।
रास न आयेगा इसको, उत्तरा-भाद्रा का मेल।
श्रवण-धनिष्ठा के कारण, जीवन होगी जेल[1]।।

12. उत्तरा फाल्गुनी

बारहवां तारा उ.फा., सिंह-कन्या में आय।
टो-पा-पी कन्या में, टे सिंह में रह जाय।।
गण मनुष्य आदि नाड़ी, योनि इसकी गाय।
छः वर्षो की सूर्य दशा, मुक्त-भोग बतलाय।।
माना लोचन अन्ध हैं, पर सूरज सा तेज।
जो भी चाहे पढ़े इसे, साफ़ खुला है पेज[2]।।
तप तपस्या करने वाला, मृदु भाषी गम्भीर।
शूरवीर बहुत बहादुर, कांधे पर हो तीर।।
कफ-वात को दमन करे, पित्त बहुत अधिकाय।
सूरज की गर्मी कारण, बहुत व्यथित हो जाय।।

[1] (केंद) इस दोहे का मूल भाव है कि जब नक्षत्र पूर्वा फाल्गुनी होगा तो जातक की जन्म राशि सिंह बनेगी। यदि किसी दूसरे सम्बन्धित व्यक्ति का नक्षत्र उत्तरा भाद्रा होगा तो उसकी राशि मीन बनेगी और जब श्रवण या धनिष्ठा होगा तो उसकी राशि मकर बनेगी, फलस्वरूप सिंह राशि का मकर और मीन से षडाष्टक दोष जीवन में परेशानी कारक रहेगा. [2] पृष्ठ।

13. हस्त

हस्त है तेरहवां तारा, चन्द्र दशा दरशाय।
कन्या राशि में जन्म हो, पू–ष–ण–ठा– वर्णाय।।

आदि नाड़ी गण देव है, योनि कहते महीष।
घोड़ी के पीछे भैंसा, सींग उगे हैं शीश।।

चतुर मगर निर्दयी हो, झूठ को माने साच।
दो चित्त वाला रहता है, पत्थर हो या कांच।।

यूं तो सुन्दर लगता है, पर लोचन कमज़ोर।
लालच के वश घूम रहा, ज्यों जंगल में मोर।।

अश्व घूमें नगरी नगरी, पीठ पे लादे भार।
कुछ तो स्वामी भक्ति की, किया बहुत उपकार।।

14. चित्रा

चित्रा है चौदवां तारा, भौम दशा का मान[1]।
पे–पो–कन्या में आयें, र–री तुला में जान।।

राक्षस गण मध्य नाड़ी, योनि बनेगी शेर।
गाय माता परोपकारी, कर दी इसने ढेर।।

पुत्र–पौत्र सम्पन्न रहे, सन्तोषी – गुणवान।
दीन दुखी की सेवा को, मानता हो भगवान।।

[1] मंगल की महादशा

ॐ

छोटी आखें दूर दृष्टि, करे न्याय की बात।
ढोंगी का भांडा फोड़े, झूठ को मारे लात।।

गाय जैसा धीरज हो, व्याघ्र जैसा जोश।
अन्याय सहन न करता, क्रोध उड़ादे होश।।

15. स्वाती

अंक पन्द्रवां स्वाती का, राहु दशा का काल[1]।
रू–रे–रो–त अक्षर को, तुला राशि में डाल।।

अन्त्य नाड़ी है देव गण, योनि कहते भैंस।
शूद्र वर्ण का प्राणी हो, रहे पेट में गैस।।

बुरे संग बरताव बुरा, भले संग हो नेक।
बूंद कहां पर गिरती है, कहां बरसता मेघ।।

धर्म–कर्म करने वाला, चतुर और होशियार।
देव भक्त पर कृपण[2] हो, करे अकसर व्यापार।।

खरी–खरी कहने वाला, सत्य को दे अधिमान।
लेकिन इसको हो जाता, यदा–कदा अभिमान।।

[1] राहु की महादशा का समय, [2] कंजूस

16. विशाखा

विशाखा–नम्बर सोलवां, गुरु भुक्ति का मान[1]।
तुला राशि में ती–तू–ते, तो वृश्चिक में जान।।

राक्षस गण नाड़ी अन्त्य, व्याघ्र योनि होय।
अंध नेत्र–चंचल प्राणी, पग–पग कांटे बोय।।

धर्म संकट में फँस गया, क्या छोड़े अपनाय।
आदर्श नहीं छोड़ता, माया जाल बिछाय।।

यूं जग में विख्यात हो, निष्ठुर मानें लोग।
पर नारी के वश रहे, कर्मो का फल भोग।।

तर्क करे हर बात पर, स्थिर नही रह पाय।
झगड़ा कोई हल नहीं, कौन इसे समझाय।।

17. अनुराधा

अनुराधा है सतारवाँ, शनि–भ्रमण का काल।
अक्षर न–नी–नू–ने हैं, वृश्चिक का है जाल।।

मध्य नाड़ी गण देव है, मृग योनि पहचान।
इस जातक को हो जाता, कभी कभी अभिमान।।

पर उपकारी होता है, घूमता है परदेश।
सब कुछ अर्पण कर रहा, बन्धुओं पर दरवेश।।

[1] गुरु की महादशा का समय

ॐ

दीन दुखी की सेवा को, देता है अधिमान।
पर मंगल का क्रोध भी, करता हैं परेशान।।

कफ दोष और रक्त का, अकसर रहता साथ।
नीच चन्द्रमा भटक रहा, कुछ नहीं इसके हाथ।।

बात करेगा बड़ी-बड़ी, नहीं जिसका सिर पैर।
मृग संग है श्वान का, महा योनि का बैर।।

18. ज्येष्ठा

नक्षत्र है अठारहवाँ, ज्येष्ठा जिसका नाम।
ज्ञानी जन करते इससे, बुध दशा का ज्ञान।।

अक्षर नो-या-यी-यू हैं, वृश्चिक राशि कहाय।
गंडमूल में जन्मा हुआ, शान्त करे सुख पाय।।

कार्य कुशल अरु मेहनती, पर उपकारी होय।
लेकिन चन्द्र नीच[1] का, धीरज मन का खोय।।

बहुत दूर की सोचता, तर्कशील कहलाय।
मन अरु मस्तिक दो चीजें, भेद गुरु समझाय।।

कफ[2] दोष के कारण जातक, रातों को कम सोय।
माता जननी है 'जिन्दल', कष्ट न दीजो कोय।।

[1] वृश्चिक राशि का, [2] नजला जुकाम आदि

19. मूला

उन्नीसवाँ नक्षत्र मूला, योनि इसकी श्वान।
राक्षस गण आदि नाड़ी, केतु दशा प्रमाण।।
ये-यो-भ-भी नाम अक्षर, धन राशि कही जाय।
इसमें जन्में जातक का, गंडमूल खुलवाय।।
धनी बहुत बनना चाहे, हो वाक्पटु प्रवीण'।
स्थिर नहीं रह पायेगा, बनता बहुत नवीन।।
जीवन भर ही सुख चाहे, पर कर्मों के हेत।
मंगल-शुक्र भटक रहे, उजड़ गया है खेत।।
मंगल महादशा अकसर, कर देती नुकसान।
अपने इष्ट औ’ प्रभु का, करते रहना ध्यान।।

20. पूर्वाषाढ़ा

पू-षाढ़ा बीसवाँ तारा, दशा भृगु दरशाय।
भू-धा और फ-ढ अक्षर, ज्योतिर्विद बतलाय।।
मध्य नाड़ी गण मानव, वानर योनि कहाय।
धन राशि का चन्द्रमा, चंचल बहुत बनाय।।
पर उपकारी होता है, भाग्यवान बलवान।
बन्धन माया जाल का, करता है परेशान।।

' बातचीत करने में होशियार

सब को सम्मोहन करे, झुक कर शीश नवाय।
अन्तर्मन के भेद को, कोई समझ न पाय।।

आठवें घर का शशि सदा, करता है नुकसान।
वृषभ राशि के मेल से, दुःखी रहे इन्सान।।

21. उत्तराषाढ़ा

इकीसवाँ उत्तराषाढ़ा, धन औ' मकर के बीच।
मानव गण अन्त्य नाड़ी, योनि नकुल की खींच।।

भे अक्षर धन में आता, सूर्य दशा का मान।
भो-जा-जी हैं मकर में, अभिजित्[1] बाकी जान।।

भाई बन्धु युक्त रहे, सुन्दर बचन सुनाय।
शूरवीर, पराक्रमी हो, विजय सदा ही पाय।।

दो नावों पर बैठ कर, नदी न करना पार।
धन को ही अधिमान दो, या करलो उपकार।।

सर्प महावैर योनि है, अन्ध नेत्र कहलाय।
रवि[2] अराधना से 'जिन्दल', कष्ट रोग मिट जाय।।

[1] अठाईसवां नक्षत्र, [2] सूर्य- भाव विष्णु भगवान की पूजा

22. श्रवण

श्रवण नक्षत्र बाइसवाँ, मकर राशि बन जाय।
दस वर्षों की चन्द्र दशा, भुक्त भोग्य बतलाय।।
अक्षर हैं खी-खू-खे-खो, सत्य कहूं यह बात।
अभिजित् की प्रथम चरण में, फँसी हुई है लात।।
वानर योनि अन्त्य नाड़ी, गण है इसका देव।
बहुत गुणों की खान हो, शंका करियो न केव[1]।।
दिखने में सुन्दर लगे, धनी दानी भी होय।
चंचल मन का जातका, पग-पग कांटे बोय।।
बहुत दूर की सोचता, शनि के घर में सोम[2]।
कभी बहुत ही सख्त हो, और कभी हो मोम।।

23. धनिष्ठा

तेइसवें नम्बर पे आवे, इसका धनिष्ठा नाम।
गा-गी अक्षर मकर में, गू-गे कुम्भ बनाम[3]।।
राक्षस गण मध्य नाड़ी, योनि सिंह प्रमाण।
महाबली भौम की भुक्ति, हाथी ज्यों बलवान।।
विद्या से प्रीति करता, करे बन्धु का मान।
संघर्षमय जीवन होगा, 'जिन्दल' निश्चय जान।।

[1] किसी प्रकार की, [2] चन्द्रमा, [3] गू-गे अक्षर कुम्भ राशि में आयेंगे

मकर राशि वाला हिस्सा, रहता है बलवान।
ठण्डे घट में बैठकर, बन जावे पाषाण।।

गृहस्थ सुख में न्यूनता, कर्मों का है फेर।
ऋतुराज[1] के आने में, बहुत लगी है देर।।

24. शतभिषा

शतभिषा चौबीवां तारा, राहु दशा का काल।
गो–सा–सी–सू अक्षर हैं, कुम्भ राशि का हाल।।

राक्षस गण आदि नाड़ी, अश्व योनि कहलाय।
महीष महाबैर योनि है, लोचन मन्द जताय।।

बहुत करे मेहनत फिर भी, फल न मिले अनुकूल।
भाग्य बड़ा बलवान है, पथ में कंकर शूल।।

मेहनत से धन जोड़ता, लोग कहें कन्जूस।
सुत–दारा के वश हुआ, ले लेता है घूस।।

भाग्य थपेडे मारता, घट में हुआ रसाव।
कन्या राशि से 'जिन्दल', रखना सदा बचाव।।

[1] वसंत ऋतु भाव विवाह होने मे देरी होगी

ॐ

25. पूर्वभाद्रा

पूर्वा भाद्रा पचीसवाँ, जीव दशा दरशाय।
आदि नाड़ी गण मानव, योनि शेर बतलाय।।

कुम्भ मीन में बँट गया, जीव दशा का काल।
से–सो–दा है। कुम्भ में, दी को मीन में डाल।।

या तो बहुत बातूनी हो, या रहता गम्भीर।
सुख और दुःख का मेल है, धुंधली सी तस्वीर।।

सुखमय जीवन के लिये, आलस्य है अवरोध।
पैर कुल्हाड़ी मारता, बेमतलब का क्रोध।।

दीन दुःखी की सेवा को, अपना धर्म बनाय।
भार गृहस्थी का 'जिन्दल', रहता इसे दबाय।।

26. उत्तराभाद्रा

उत्तरा भाद्रा छवीसवाँ, योनि बनेगी गाय।
शनि दशा में जन्म हुआ, दू–था–झ–ञ वर्णाय।।

मानव गण मध्य नाड़ी, सुन्दर लोचन गाय।
राशि मीन बन जायेगी, जीव[1] ईश कहलाय।।

गौर वर्ण सुन्दर लोचन, राज्य गुणी प्रधान।
वैरी को मार भगाता, ज्ञानी और विद्वान।।

[1] बृहस्पति इस का स्वामी है.

धर्म कर्म में लीन रहे, बड़ों को दे सत्कार।
साहस से भरपूर हो, करता पर उपकार।।

बहुत तेज रफतार हो, लेकिन मन भटकाय।
दो नावों पर बैठ कर, पार न उतरा जाय।।

27. रेवती

अन्तिम तारा रेवती, गंडमूल का दोष।
दे-दो-च-ची अक्षर हैं, मीन राशि का जोश।।

अन्त्य नाड़ी देव गण, योनि बने गजराज[1]।
बुध दशा का भुक्त भोग्य, अन्ध नेत्र सा बाज।।

शूरवीर और पराक्रमी, मन से निर्मल होय।
धनी मानी बन जायेगा, पर धीरज न खोय।।

मीठी वाणी बोलकर, सब के मन बसजाय।
बहुत गुणों की खान हो, हर जगह आदर पाय।।

शुभ फल हेतु गंडमूल का, शान्त करावे दोष।
फल मिलेंगे शुभ 'जिन्दल', और बढ़ेगा कोष।।

[1] हाथी

ॐ

राशियों का परस्पर गुण-दोष

एक राशि तेरी-मेरी, भले हो नाड़ी दोष।
पलपल स्नेह उडेलती, पल भर में ही रोष।।
स्वराशि से दूजी राशि, धन कुटुम्ब का भाव।
अकस्मात् ही हानि हो, अकस्मात् ही लाभ।।
मेल हो जब तीजी राशि, बढ़े तेज इकवाल'।
सहज हुये दुष्कर कारज, बरसे धन और माल।।
सुख समृद्धि प्राप्त हो, चौथी राशि के संग।
भूमि वाहन लाभ मिले, उमड़ी रहे उमंग।।
पांचवीं राशि बन जाता, नव पंचम का योग।
तप-तपस्या विद्या-बुद्धि, या फिर सुत सुख भोग।।
छठी राशि का मेल सदा, झगड़ा और तकरार।
दोनों में से एक रहे, थोड़ा बहुत बीमार।।
सातवीं राशि शुभ फल दे, सदा मिले सहयोग।
पूर्वजन्म के शुभ कर्म का, जातक भोगे भोग।।
आठवीं राशि मेल हुआ, मृत्यु कष्ट या रोग।
नरक-स्वर्ग यहीं हैं बन्धु, कर्मों का फल भोग।।

'प्रताप (Influence)

ॐ

नवम राशि पंचम जैसी, इक सा गुण और दोष।
न जाने कब करवा दे, पति-पत्नी में रोष।।

दशम राशि से मेल कभी, करे नहीं नुक्सान।
बिगड़ा कारज सुधरेगा, सुखी रहे इन्सान।।

ग्यारहवीं राशि लाभ है, देती धन और माल।
नौकर चाकर दासियां, सुख सुविधा को पाल।।

बारहवीं राशि खर्च हो, धन का रहे अभाव।
जातक को चिन्ता रहे, मिले कहां से लाभ।।

जो भी जातक सुख चाहे, दे इस पर कुछ ध्यान।
शब्दों के सुन्दरपन को, मत देवे अधिमान'।।

यह माना सुन्दर वस्तु, सबको सदा सुहाय।
पत्थर कंकर से 'जिन्दल', तेल कहां मिल पाय।।

शुभ राशि से मेल मिले, जीवन सुखमय जान।
समय ही करवाय 'जिन्दल', भले बुरे का ज्ञान।।

' अहमियत (Importance)

भकूट

(षड़ष्टक दोष)

‘जिन्दल’ भावी प्रबल है, मीन न होवे मेष।
कर्मों के अनुरूप ही, लिखे विधाता लेख।।
अनुभव का आधार है, नहीं कोरा अनुमान।
जानेगा इस तथ्य को, भोगे जो इन्सान।।
जन्म राशि या नाम से, छठी–आठवीं राश।
लाभ नहीं दे पायेगी, करे सुखों का नाश।।
यह दोष महा बलवान है, भकूट पडा है नाम।
स्वर्ण दान सा दान भी, न कर पाय कल्याण।।
जन्म राशि से आठवें, जिस जातक का नाम।
भटकेगा भरमायेगा, वह निज उम्र[1] तमाम।।
छठी राशि का मेल भी, विपदा कष्ट कलेश।
हानि परेशानी रहे, दुःख भोगे लग्नेश[2]।।
पति पत्नी की राशि में, हो षड़ष्टक का योग।
किसी समय भी घेर ले, रोग–शोक–वियोग।।
नगर ग्राम इस योग के, चैन हरें दिन रैन।
मित्र बैरी हो जायेंगे, नीर बहेंगे नैन।।

[1] आयु [2] भाव जातक

मित्र राशि सम भाव भी, मेट सके न कुयोग।
जहर न अमृत बन सके, कह गये ज्ञानी लोग।।

निज राशि से छठे-आठवें, व्यवसाय का नाम।
लाभ हानि सब जोड़ कर, हानि रहे परिणाम।।

महादोष इस योग से, रहे जो जातक दूर।
रोग-शोक-भय-कष्ट मिटे, भोगे सुख भरपूर।।

कर्म गति को टालना, दुष्कर तो है जरूर।
ज्योति ज्योतिष ज्ञान की, करे अन्धेरा दूर।।
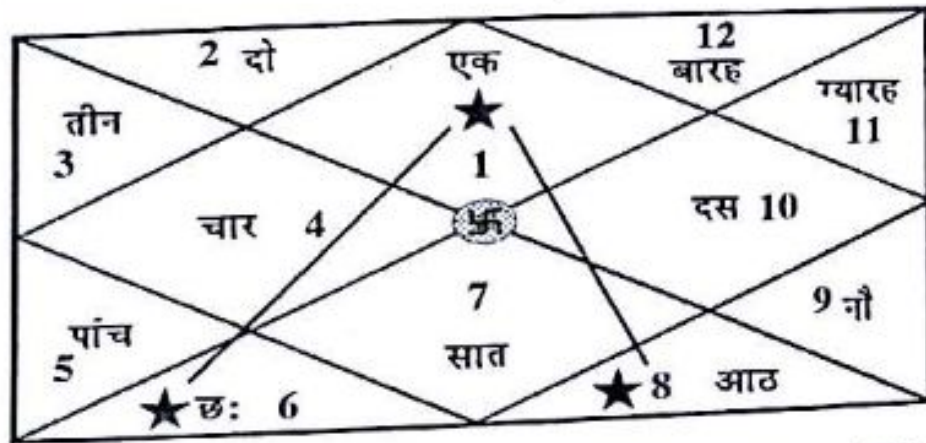
★ १. मान लीजिये किसी जातक की जन्म राशि मेष है तो उसका (6 नंबर) कन्या राशि से (8 नंबर) वृश्चिक राशि के साथ षड़ष्टक योग बन जायेगा।

२. वृष राशि का तुला और धन राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
३. मिथुन राशि का वृश्चिक और मकर राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
४. कर्क राशि का धन और कुम्भ राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
५. सिंह राशि का मकर और मीन राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
६. कन्या राशि का कुम्भ और मेष राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
७. तुला राशि का मीन और वृष राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
८. वृश्चिक राशि का मेष और मिथुन राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
९. धन राशि का वृष और कर्क राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
१०. मकर राशि का मिथुन और सिंह राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
११. कुम्भ राशि का कर्क और कन्या राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।
१२. मीन राशि का सिंह और तुला राशि से षड़ष्टक योग बनेगा।

कालसर्प योग
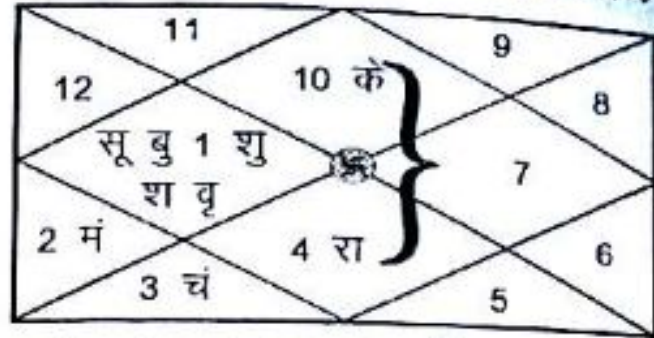
राहु केतु के दरमियान[1], ग्रह सात के सात ।
ज्योतिर्विद हैं भाषते, काल सर्प की बात।।

दोष विधाता को कैसा, निज कर्मों का खेल ।
पूर्व जन्म से बँधा है, पाप ग्रहों से मेल।।

विषधर है यह महाबली, काटे विष फैलाय ।
जीवन भर इन्सान को, वहम सर्प का खाय।।

यह वक्र गति गत घूमते, इन्हें सम-सप्तक देख।
उल्टी गणना चल रही, दशम-नवम और एक।।

बारह राशि लग्नों का[2], अलग-अलग प्रभाव ।
किसी राशि में यम पुरी, किसी में गहरे घाव।।

चक्रवात बन घेर ले, आँधी और तूफान ।
चैन नहीं ले पायेगा, जीवन भर इन्सान।।

जिस जातक की पत्री में, यह कैंची सा योग ।
उस जातक को सम्भव है, कैंसर जैसा रोग।।

इसके दुःप्रभाव से, औषध विष बन जाय ।
वमन रूप में उगल दे, जातक जो भी खाय।।

[1] मध्य, [2] अनंत, कुलिक, वासुकि, शंखपाल, पद्म, महापद्म, तक्षक, कार्कोटक, शंखनाद, विशावत और शेष नाग आदि ।

लग्न या सप्तम में पड़े, काल सर्प यह योग।
गृहस्थ नरक बन जाये, कर्मों का फल भोग।।

धन सदन या आयु घर में, ऐसा लगे विचार।
भूत–प्रेत बाधा सम्भव, या मुमकिन अभिचार[1]।।

चतुर्थ भाव में आन कर, करे सुखों का नाश।
संतप्त रहे सन्ताप से, मात पिता अरु सास।।

व्यय भाव या षष्ठ में, बने अगर यह योग।
कष्ट की अवधि लम्बी हो, क्या करें सियाने लोग ।।
इन संग कोई खग बैठे, दिखे अगर यह मेल।
ज्ञानी जन ही समझेंगे, तब अंशों का खेल।।
इक चढ़े इक सीढ़ी उतरे, एक कुटिल इक नेक।
अंश बतावें तब 'जिन्दल', कहां है इसमें छेक।।
राहु केतु की कैंची से, एक भी खग हो पार।
कालसर्प न होगा 'जिन्दल', यह है सत्य विचार।।
अर्धचन्द्र या एकावली सा[2], बने अगर यह योग।
विष में अमृत घुल जाये, पनम सके कम रोग।।
वृष–मिथुन–कन्या–तुला में, हो इसकी शुरूआत।
थोड़े समय का कष्ट हो, कम पहुंचे आघात।।
राहु पड़े जिस घर 'जिन्दल', उसकी राशि विचार।
उस राशि के दिव्य वर्ष, यह मारेगा मार।।

[1] किसी द्वारा किया कराया टोना, [2] एक अन्य योग

ॐ

चालीस में दो वर्ष बढ़ाओ, या चालीस में आठ ।
इन वर्षों के मध्य 'जिन्दल', करे यह अपनी गाँठ।।

मौत की औषध नहीं है, जीवन के उपचार ।
अनहोनी टल जायेगी, होनी करे लाचार।।

जिस कुण्डली में योग हो, निर्जन स्थल न जाय ।
औषध अपने आप न ले, ताजा भोजन खाय।।

नाग पंचमी जिस दिन हो, स्वर्ण सर्प का दान ।
नाग देवता का पूजन, कर देवे कल्याण।।

सर्प बना कर स्वर्ण का, गोमेद मुख की ओर ।
रत्न केतु[1] को दुम जड़कर, गंगा में दे तोर।।

या शिवजी के चरणों में, कर दे इसको भेंट ।
भोले भण्डारी चाहें तो, देवे इसको मेट।।

निष्फल निःप्रभावी रहें, जब भी सभी उपाय ।
जातक प्रेम से जप करे, ओ३म् नमः शिवाय।।

'जिन्दल' मांगे ईश से, जन - जन का कल्याण ।
सदा सहाई होत हैं, शिव शंकर भगवान।।

[1] लहसुनिया

केन्द्र दोष

दो केन्द्रों का इक स्वामी, केन्द्र दोष जतलाय।
वह शुभ फल नहीं देता, कुछ लोगों की राय।।

दो केन्द्रों के ईश हैं, केवल सोमज जीव।
मिथुन–कन्या, धन–मीन में, पड़ेगी इसकी नींव।।

और किसी ग्रह राशि से, नही बने यह योग।
दोनों में से एक का, काट रहा हूं रोग।।

मिथुन–कन्या में बुध बने, दोनों का लग्नेश।
एक में यह सुख का स्वामी, एक में है राजेश।।

बुध करे इन भावों में, भद्र[1] योग निर्माण।
केन्द्र दोष क्या कर पाय, क्यों होगा नुक्सान।।

इसी तरह धन–मीन में, गुरु बनता लग्नेश।
इक में यह राजेश है, एक में है सुखेश।।

इन घरों में गुरु करेगा, हंस[2] योग निर्माण।
इन लग्नों को किस लिए, जीव करे नुक्सान।।

केन्द्र दोष निर्माता है, मिथुन–कन्या को जीव।
धन और मीन लग्न में, बुध है इसकी नींव।।

[1–2] यह दोनों पंचमहापुरुष योग के अन्तर्गत आते हैं।

इन दोनों के दोष का, कारण एक विशेष।
एक दूसरे के दोनों, होंगे ही सप्तमेश ।।

सातवां घर मारक है, मारकेश है ईश।
मारक, मारने वाला, ऐसा कहें मनीष।।

बुध मारक धन मीन में, मिथुन कन्या में जीव।
एक दूसरे की खोदें, मारक होकर नींव।।

धन-मीन में केन्द्र-दोष, बुध करता निर्माण।
मिथुन-कन्या में जीव से, बनेगा यह श्रीमान।।

पिता-पुत्र दोनों रूठे, फैंक रहे हैं कीच।
मीन में तभी तो सोमज, हो जाता है नीच।।

लग्नेश को कब लगता, अष्टमेश का दोष।
दो केन्द्रों का ईश है, क्योंकर इस पर रोष।।
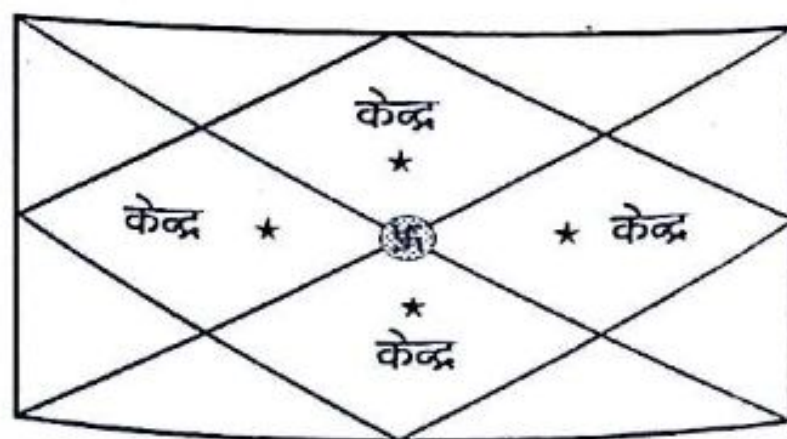
★ चिह्न वाले चारों भाव केन्द्र कहलाते हैं।

एक रहस्य

कलियुग की माया 'जिन्दल', या कर्मों का फेर।
शुभ खग शुभता न देवे, पाप करे नहीं देर।।

उच्चराशि में ग्रह देखके, व्यर्थ न जाना फूल।
रिपु यदि बलवान पड़ा हो, तो खतरों को तूल।।

नीच ग्रह राज करादे, उच्च गिरावे गाज।
सब भावी के खेल हैं, भाव ईश के राज।।

सभी वृक्ष न फल देते, सभी न देते शूल।
सभी न हो चन्दन 'जिन्दल', और सभी न बबूल।।

कारक–मारक–अकारक, या फिर एक समान।
भाव बतावें कुण्डली के, क्या है इनका मान।।

लग्न ईश है सदा सहायी, पड़े अगर बलवान।
नौ–पांच घर के स्वामी, करते हैं कल्याण।।

केन्द्रों के स्वामी अकसर, देते फल अनुकूल।
त्रिक भावों के स्वामी, रहते हैं प्रतिकूल।।

तुम्हें बताता हूं 'जिन्दल', नुक्ता एक आसान।
जब पत्री का मनन करो, रखो इसका ध्यान।।

दो वर्गों में बांट लो, का–खा रखलो नाम।
'क'[1]को जीव का घर जानों, 'ख'[2] को भृगु का धाम।।

---

[1] क - बृहस्पति का [2] ख - शुक्र का

ॐ

वर्ग गुरु में भानु लेलो, चन्द्र और इक भौम।
'क' वर्ग में लग्नें आई, जीव–रवि–कुज–सोम।।

'ख' वर्ग है दैत्य गुरु का, सोमज शनि हैं साथ।
राहु भी इसी वर्ग में, यह है पक्की बात।।

दो वर्गों में बँटी लग्नें, ग्रह चार और चार।
केतु अच्छे और बुरे का, करता रहा विचार।।

'क' वर्ग वाले जातक को, 'ख' न होय अनुकूल।
'ख' वर्ग के चारों ही खग, फल देंगे प्रतिकूल।।

इसी तरह 'ख' की लग्नें, या फिर इनके ईश।
'क' वालों से बैर करें, देंगे 'जिन्दल' टीस।।

कारक–मारक–अकारक, ग्रह बद है या नेक।
वर्गों में बांट के देखो, कहां है किसमें छेक।।

निज वर्ग स्वामी 'जिन्दल', बैठे हों बलवान।
वर्ग शत्रु[1] कर न पाय, हानि और नुक्सान।।

वर्ग शत्रु बलवान पड़े, यह न जाना भूल।
शत्रु तो शत्रु 'जिन्दल', शूल तो आखिर शूल।।

शुभ अशुभ का पैमाना, भले बुरे का ज्ञान।
बता दिया तुमको 'जिन्दल', रखना इसका ध्यान।।

[1] क वर्ग वाले को ख वर्ग और ख वर्ग वाले को क वर्ग शत्रु रूप में फल देगा।

साढेसाती[1]
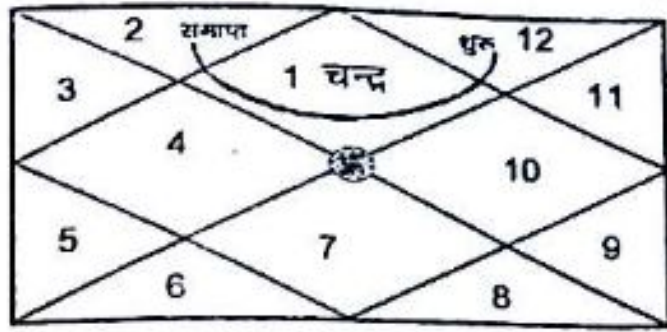
साढ़सती आत्म घाती, भोगे हर इन्सान।
समय पड़े गहन कन्दरा, छुपे रहे भगवान।।

साढ़सती जब घेरेगी, कहाँ बचेगी साख।
रावण की स्वर्ण-लंका, हो गई जल कर राख।।

श्रीराम को राज्य बदले, दिया इसने बनवास।
खाने को कोदों मिली, और बिछौना घास।।

साढ़सती ने बना दिया, रावण को भी ढोर।
शास्त्रों का ज्ञानी था, बन गया ढोंगी चोर।।

हरिश्चन्द्र से सज्जन ने, दर दर छानी खाक़।
चार टकों के मोल बिका, उड़ी मरघट में राख।।

विक्रम जैसा योद्धा भी, पींगला औ' लाचार।
तेली-घर कोल्हू पीसे, साढ़सती की मार।।

बहुत मेहनत करवाय, बहुत करे परेशान।
साढ़सती जो काट ले, उसे तू कुन्दन जान।।

ठग्गी चोरी होती है, साढ़सती के बीच।
अच्छा खासा सज्जन भी, करदे कारज नीच।।

---

[1] इस की गणना जन्म या नाम राशि से करें लग्न से नहीं।
जब शनि किसी राशि के बारहवे भाव में आ जाता है तब साढ़ेसाती शुरू हो जाती है और जब शनि उस राशि के दूसरे भाव से निकल जाता है तब साढ़ेसाती समाप्त हो जाती है।

ॐ

वात रोग घेरें इसमें, हो जोड़ों में दर्द।
खून पानी बन जाये, चेहरा होवे जर्द।।

मेष कर्क सिंह राशि को, करती बहुत खराब।
वृश्चिक राशि वाले को, पी जाती है शराब[1]।।

सदा नहीं पतझड़ 'जिन्दल', सदा रहे न बहार।
सदा नहीं दुख की आंधी, सदा न सुख उपहार।।

जन्म की स्थिति पर निर्भर, साढ़सती की मार।
जन्म समय शनि शुभ पड़े, करदे बेड़ा पार।।

कारक हो यदि कुण्डली में, करता कम नुक्सान।
त्रिषडाय[2] भावों में भी, राह करे आसान।।

[1] भाव वृश्चिक राशि वाला नशा आदि व्यसनों में फँस जाता है [2] तीन-छः-ग्यारह भाव

साढ़सती के चरण
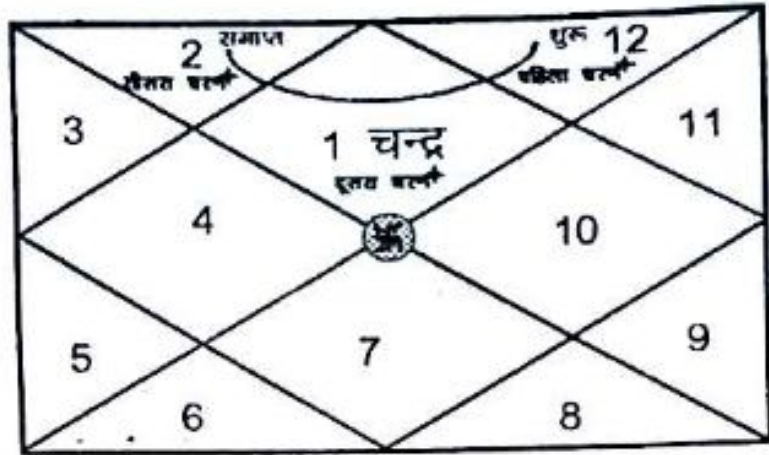
ढाई वर्ष, तीन चरण का, साढ़सती का काल।
विपदा कष्ट क्लेश का, बिछ जाता है जाल।।

लग्न बारहवें या दूजे, साढ़सती का काल।
हरिश्चन्द्र जैसा राजा, रावण सा चण्डाल।।

किसी राशि के बारहवें, शनि अगर आ जाय।
साढ़सती का प्रथम चरण, सिर पर शोर मचाय।।

व्यय बहुत होता इसमें, हानी और नुक्सान।
कारावास का दण्ड लगे, या भटके इन्सान।।

राशि में प्रवेश हुआ, ढायी वर्ष के बाद।
रीढ की हड्डी टूटेगी, जातक होगा बरवाद।।

जातक की छाती पर यह, मन्द मन्द मुस्काय।
न मरने न जीने देवे, जातक चैन न पाये।।

चरण तीसरा दूजे घर, शनि का हो प्रवेश।
अन्तिम ढैया अब हुआ, ढायी वर्ष है शेष।।

* पहिला चरण सिर पर, दूसरा छाती पर, तीसरा पैरों पर।

पैरों पर आकर बैठा, आफत का यमदूत।
वर्तमान की सुध रखना, बीत गया है भूत।।
अग्नि परीक्षा अब होगी, मत हो जाना फेल[1]।
शनि देव खेले इसमे, तरह तरह के खेल।।

ढैया[2]
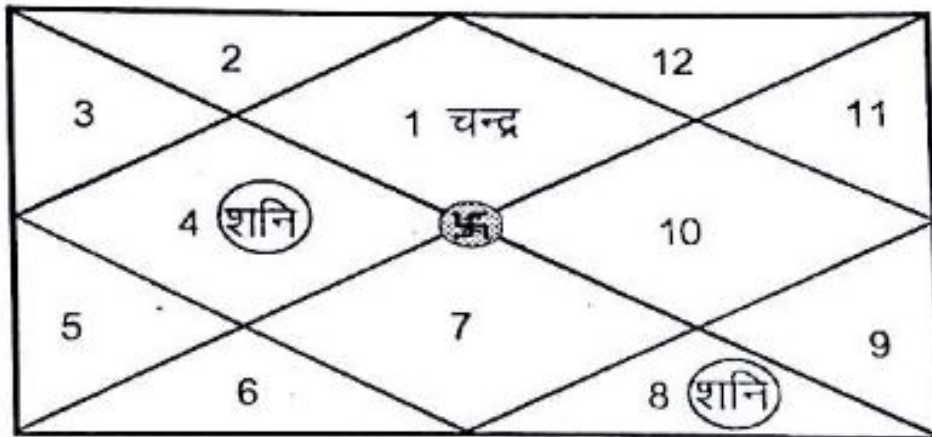
ढाई वर्ष का है ढैया, शनि भ्रमण के बीच।
मित्र शत्रु सम राशि गत, उन्नत या फिर नीच।।
चौथी-आठवीं राशि को, ढायी वर्ष का रोग।
बना हुआ कारज बिगड़े, कर्मों का फल भोग।।

[1] असफल,

[2] जब शनि जन्म राशि या नाम राशि से चतुर्थ (4) और अष्टम (8) होगा तब ढैया माना जायेगा।

शनि की साढ़ेसाती का
बारह राशियों पर प्रभाव

1. मेष
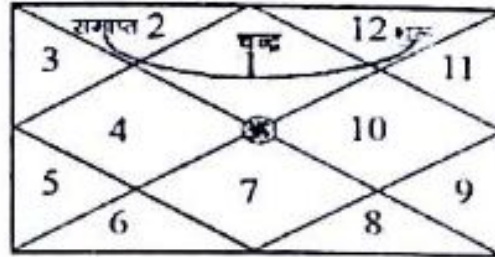
मेष को पहिला ढैया, शुभ कर्मों पर खर्च।
दूजा ढैया छाती पर, कर दे बेड़ा गर्क।।
तीजा ढैया पैरों पर, राहत और कुछ चैन।
बीते कल को याद कर, भर आयेंगे नैन।।

2. वृष
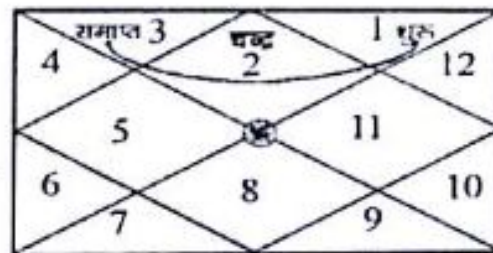
वृषभ का प्रथम चरण में, लेवे सब कुछ लूट।
धर्म कर्म छोड़ दे प्राणी, मन से जावे टूट।।
वृष राशि को दूजा ढैया, लग्न हुआ प्रवेश।
क्रोध की ज्वाला भड़क उठी, कुछ न बचेगा शेष।।
तीजे चरण में आनकर, लेगा सुख की सांस।
मरहम लगे उन जख्मों पर, जला जहां से मांस।।

मेष राशि को शनि की साढ़ेसाती- जब शनि मीन राशि पर आ जायेगा तो शुरू हो जायेगी, जब शनि मेष राशि में होगा तो साढ़ेसाती का दूसरा ढैया और जब शनि वृष में होगा तब तीसरा अंतिम ढैया होगा। इस प्रकार अन्य राशियों को समझें।

3. मिथुन
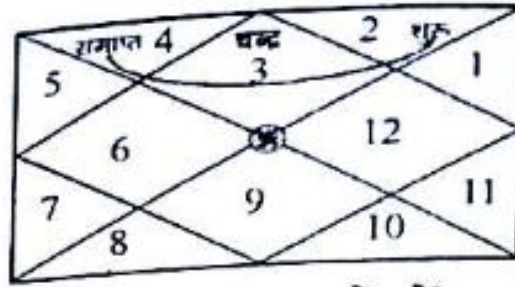
मिथुन को पहिला दूजा, दोनों एक समान।
सज्जन प्राणी बन्धु का, करते नहीं नुक्सान।।
अन्तिम ढैया मिथुन को, शत्रु सम व्यवहार।
धन हानि नेत्र पीड़ा, हरदम ही तकरार।।

4. कर्क
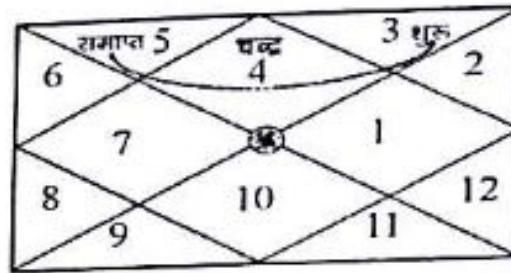
कर्क को पहिला ढैया, व्यर्थ यूंहि भटकाय।
औषध रोग पर खर्च हो, जातक जो भी कमाय।।
हृदय पर पाषाण गिरा, ढायी वर्ष के बाद।
दूसरा ढैया कर्क को, कर देता बरवाद।।
तीसरा अन्तिम ढैया, लेता है पद खींच।
धन हानि घर में झगड़ा, मत आंखों को मीच।।
अन्तिम ढैया कर्क को, दे मारक प्रभाव[1]।
हीरे मोती बिक गये, चार टकों के भाव।।

[1] मृत्यु तुल्य कष्ट

5. सिंह
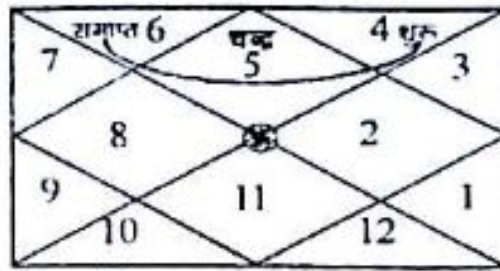
सिंह को पहिला ढैया, करे धन का नुक्सान।
भाग्य थपेड़े मारता, पति–पत्नी परेशान।।
क्रोध बढ़ावे दूसरा, घर में रहे तनाव।
पेट की अग्नि धधक उठी, उबल रहा है आब।।
तीजा ढैया सिंह को, पैरों पर जब आय।
धन की स्थिति सुधरेगी, चैन नहीं मिल पाय।।

6. कन्या
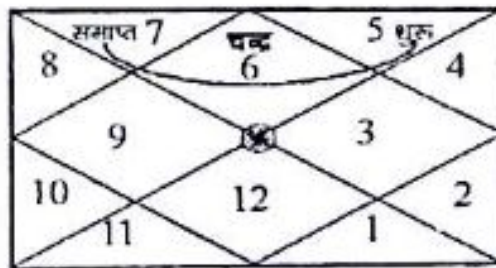
कन्या को पहिला ढैया, मन्द[1] सिंह में आय।
रोग संतति औषध पर, खर्च बहुत करवाय।।
झगड़े बाजी बढ़ जाती, दूर गमन परदेश।
अपना साया साथ नहीं, फटा पुराना वेश।।
दूजा ढैया आकर दे, राहत औ' कुछ चैन।
पर प्रिय बन्धु बोल रहे, उल्टे – सीधे बैन।।
तीजा ढैया पैरों पर, उन्नत[2] है शनि देव।
'जिन्दल' बिगड़े काज अब, सुधरेंगे स्वयमेव।।

[1] शनि [2] उच्च (तुला में)

7. तुला
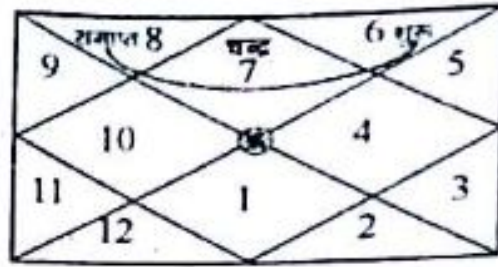
बारहवें घर तुला के, सादसती प्रवेश।
खर्च करावे शुभ जगह, रखवाला दरवेश।।
तुला में उच्च हुआ है, दूजे घर के बीच।
साहस-बल-तेज बढ़ावे, लखे सातवें नीच।।
तीजे चरण का ढैया, देता है धन लाभ।
व्यर्थ का घर में झगड़ा, किन्तु दूसरे भाव।।

8. वृश्चिक
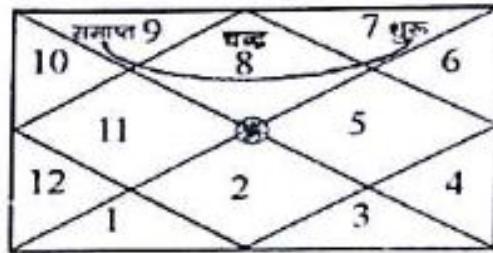
वृश्चिक को सादसती का, प्रथम चरण का काल।
ढाई वर्ष मौज करावे, सूर्य वंश का लाल[1]।।
दूजा ढैया छाती पर, बढ़े तेज इकबाल।
कर्म-गति की माया है, झड़ने लगे हैं बाल।।
धन माल पी गई दारू[2], पति-पत्नी में दरार।
अपने बेगाने हुये, कौन करेगा प्यार।।
अन्तिम ढैया बाकी है, शनि गया धन भाव।
कुछ तो राहत दे देगा, मिलने लगेगा लाभ।।

[1] भाव - सूर्य पुत्र शनि [2] मदिरा - शराब

9. धन
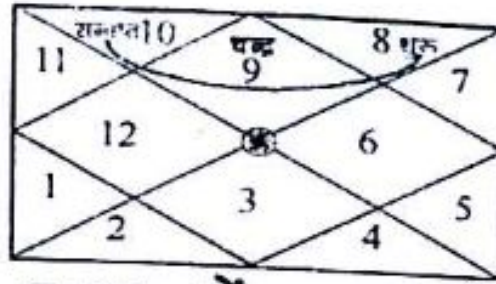
धन को प्रथम चरण में, कर देती बरवाद।
अवनति चिन्ता औ' बन्धन, पीड़ा का प्रसाद।।
दूसरा ढैया धनु को, देता धन औ' माल।
गुरु की राशि बैठा है, मत चिन्ता अब पाल।।
तीजे चरण में निज राशि, शनि दूसरे भाव।
कोष बढ़ावे इस घर में, अकस्मात् हो लाभ।।

10. मकर
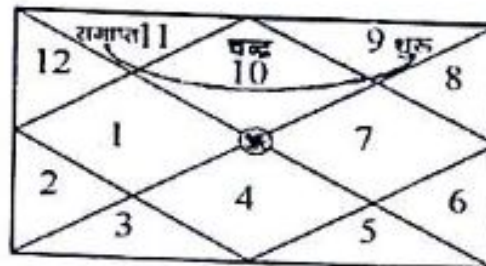
मकर को साढ़सती की, होती जब शुरूआत।
लक्ष्मी माता रूठी समझो, घनी अन्धेरी रात।।
दूजा ढैया अपना घर, लौटा देता मूल।
पति-पत्नी में एक की, टेढ़ी रहे पर चूल[1]।।
तीजा ढैया मकर को, देगा अचानक लाभ।
अपने घर अपनी राशि, आ बैठा है नबाव[2]।।

[1] भाव - दोनों में से एक बीमार रहता है या मन मुटाव रहता है [2] भाव - एक अधिकारी

11. कुम्भ
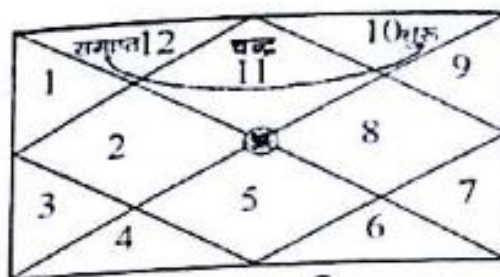
कुम्भ को पहिला ढैया, व्यर्थ भ्रमण अरु रोग।
मूषक भांति चुरा रहे, धन को अपने लोग।।
दूजे चरण में कुम्भ को, करती नहीं खराब।
गृहस्थ बचाना हो तो, पीना नहीं शराब।।
अन्तिम ढैया आन कर, उथल पुथल कर देत।
बाढ़ खेत को खा गई, उजड़ गया है खेत।।
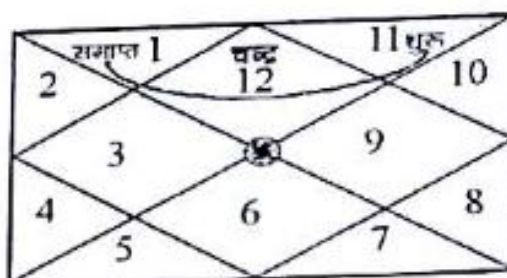
12. मीन

मीन को पहिला ढैया, कर देता बरवाद।
लाख यत्न के बाद भी, हानि औ' अवसाद[1]।।
छाती पर दूजा ढैया, जाने क्या कर जाय।
सादसती तो सादसती, इस से प्रभु बचाय।।
तीजे चरण धन घर में, मन्द नीच कहलाय।
हानि हो लाभ के बदले, अमृत विष बन जाय।।
नीच शनि झगड़ा कारक, गृह यृद्ध टकराव।
पावस[2] में अग्नि बरसी, सूख गया तालाब।।

[1] दुःख [2] बरसात - वर्षा ऋतु

साढ़ेसती–उपचार

जिस पर भी हो साढ़सती, करे तेल का दान।
दान की महिमा अद्‌भुत है, दान से हो कल्याण।।

कुत्ता जाति के जन्तु को, देता रहे खुराक।
रूखी सूखी जो भी हो, उपर रख दे साक[1]।।

कीट मकौड़ों को शक्कर, तिल चावल के साथ।
रोज डाल सके तो डाले, जातक अपने हाथ।।

काला वस्त्र या जूता, तिल या काले फूल।
दान करे साढ़सती में, पड़े न उस पर धूल।।

शनि देव का व्रत करे, गंगा जल से स्नान।
साढ़सती के दौर में, जातक का कल्याण।।

दीन दुःखी की सेवा भी, वृथा कभी न जाय।
रोग शोक भय कष्ट मिटे, सुख संपत्ति घर आय।।

मां दुर्गा का पाठ करे, शंकर जी का ध्यान।
शनि नहीं कर पायेगा, जातक को परेशान।।

शनिवार तेल पकौड़ा, खाये और खिलाय।
वात रोग का शमन[2] करे, यह नन्हा सा उपाय।।

---

[1] [illegible] [2] [illegible]

ॐ

महाबली हनुमान जी, देते इसको धूर।
बजरंगी के नाम से, भागे कोसों दूर।।

समर्थ प्राणी कर सके, नीलम का भी दान।
या फिर काले उड़द का, दान करे कल्याण।।

लौह धातु का दान भी, सिर से बोझ घटाय।
दान सरसों के तेल का, मरहम[1] सा बन जाय।।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः, शनये नमः का पाठ।
श्रद्धा से जो भी करले, उस जातक की ठाठ।।

[1] एक औषधि का लेप

मंगल दोष

मंगल दोष से सब डरें, पत्री में न यह ठीक।
मात पिता चिन्ता डूबे, सुना शिशू मंगलीक।।

कुज–दोष,भौम–दोष हैं, इसी योग के नाम।
लीक फेरना मंगल[1] पर , बद मंगल का काम।।

लग्न कुण्डली

12 10 1 11मं 9 रा 2 चं 8 के श 3 5 7 शुबु4वृसू 6

चन्द्र कुण्डली

लग्न या चन्द्र कुण्डली में, दोनों में कुज दोष।
अठाईस वर्ष आयु तक, दाम्पत्य में रोष।।

एक–चार–सात–आठवें, या फिर बारहवें भाव।
मंगल इन भावों में हो, देता गहरे घाव।।

जिस जातक की पत्री में, इन भावों में भौम।
जातक तिल तिल जलता है, ज्यों रातों में मोम।।

चैन हरे आराम हरे, करे सुखों से दूर।
रक्तचाप सिर चढ़ जाये, जातक हो मजबूर।।

देखे और सुने भी हैं, इसके कुछ परिहार।
अनुभव के अन्तर्गत वह, सिद्ध हुए बेकार[2]।।

[1] भाव - शुभता [2] निरर्थक

जैसे केन्द्र में चन्द्रमा, या मंगल के पास।
कुण्डली में यदि ऐसा हो, भौम दोष हो नाश।।

मंगल से राहु युक्त हो, नहीं करे नुक्सान।
कुछ आचार्य करते हैं, ऐसा ही अनुमान।।

दूजे घर में भृगु शशि का, मेल अगर हो जाय।
भौम न होय अंगारक[1], जातक शुभ फल पाय।।

मेष का मंगल लग्न में, वृश्चिक का सुख भाव।
सातवें होवे उच्च का, नहीं करेगा घाव।।

आठवें होवे कर्क का, हो जाता है नीच।
धन का होवे बारहवें, लेता आखें मीच।।

केन्द्र में शुभ ग्रह हों, देते इसको मेट।
नहीं अमंगल कर पाय, गुरु से करले भेंट[2]।।

उदाहरण (1)

[1] भाव – आग लगाने वाला   [2] भाव – सम्बन्ध

कुज कर्क का तीजे हो, भृगु आठवें भाव।
सातवें भाव में राहु-शनि, कौन करेगा बचाव।।
मंगल दोष इसमें नहीं, किसी रंग या रूप।
सुख मिले कैसे इसको, खिलेगी कैसे धूप।।
सातवें उच्च का मंगल हो, दोष अमंगल खोय।
ऐसा समझा जाता है, यह मंगल शुभ होय।।
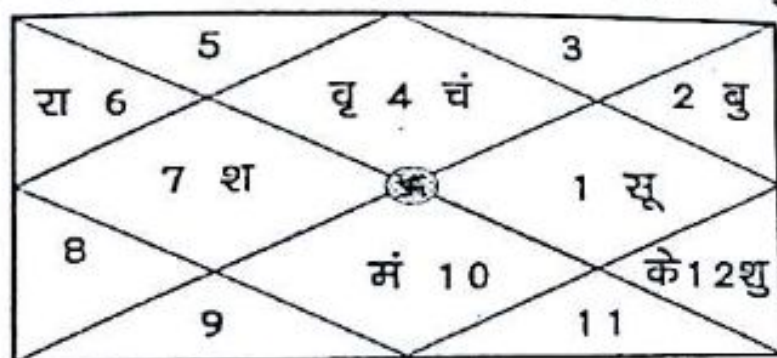
प्रभु राम की कुण्डली में, सातवें उच्च भौम।
दर-दर भटकी जनक दुलारी, प्रभु पिघले ज्यूं मोम।।
केन्द्र भाव में चन्द्रमा, या मंगल के साथ।
भौम दोष न माना जाय, लोग कहें यह बात।।

उदाहरण (2)
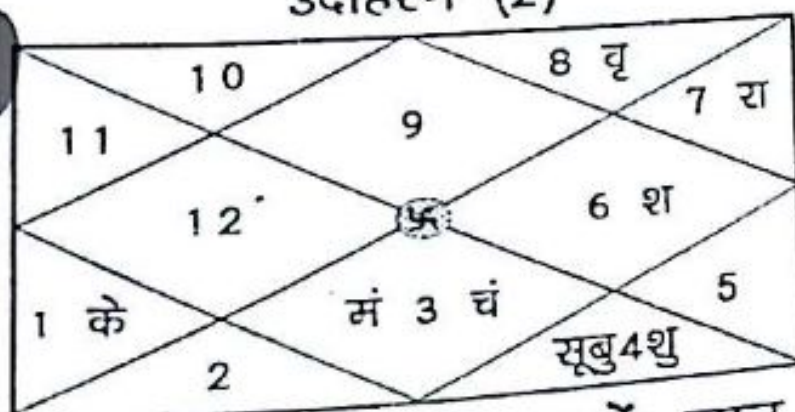
जाया भाव[1] में भौम शशि, करें मान लो मेल।
दशम शनि लाभ में राहु, खेल रहें हो खेल।।

[1] स्त्री - सातवां भाव

रवि भृगु संग आठवें, पड़े सप्तमाधीश[1]।
घर व्यय हो भाग्यवश, इसी लग्न का ईश।।
केन्द्र में क्या शशि करेगा, या मंगल के पास।
दोष अमंगल हो पाये, कैसे इसमें नाश[2]।।
मंगल राहु मिल कर कार्टे, कुण्डली में कुज दोष ।
ऐसी धारणा के सज्जन, करे न मुझ पर रोष।।

उदाहरण (3)

भाव	राशि / ग्रह
1	रा 2 मं
2	3
3	4
4	5
5	6
6	श 7 वृ
7	के 8 शु चं
8	सू. 9 बु
9	10
10	11
11	12
12	1

राहु भौम वृष लग्न में, छटे शनि और जीव।
सोमज सूरज आठवें, खोद रहे हों नींव।।
नीच शशि औ' केतु संग, बैठ गया लग्नेश।
वैवाहिक जीवन का सुख, कहां रहेगा शेष।।
भौम राहु से युक्त यहां, आग में घी का काम।
चरित्र हनन हो जायेगा, जातक हो बदनाम।।
पति/पत्नी में हो पाये, बोलो कैसे स्नेह।
वंश बढ़ेगा जातक का, इसमें भी सन्देह।।

[1] सातवें भाव का स्वामी [2] भाव - समाप्त

विशेष

दूजे घर बैठा मंगल, लखे न सप्तम भाव।
पांचवें आठवें नौवें देखे, क्या देगा प्रभाव।।

माना मारक घर दूजा, आठवां है यमलोक।
मृत्यु ही तो परम सत्य है, इस पर कैसा शोक।।

छठे दशम घर में भी तो, लग्न लखेगा भौम।
चन्द्र कुण्डली देखें तो, खलल[1] करेगा सोम।।

यूं अकेला मंगल 'जिन्दल', ज्योतिष में बदनाम।
नीम-धतूरा-कीकर तो, चूस रहे हे आम।।

[1] बाधा

मंगल दोष परिहार

भौम दोष परिहार के, लिखता हूं उपचार।
क्रोध द्वेष को छोड़कर, करना मनन विचार।।

एक चार सात आठवें, अथवा बारहवें भाव।
मंगल निज राशि में तो, नहीं करेगा घाव।।

पुरुष कुण्डली में पहिले, भृगु देखिये जरूर।
शुभ स्थिति में बैठा हो, करदे इसको दूर।।
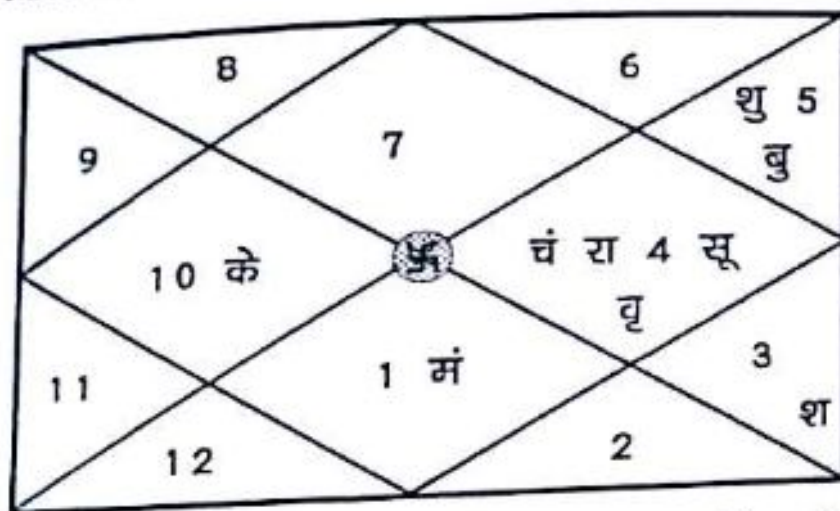
पत्नी कारक माना है, हर कुण्डली में मूल।
दोष अमंगल जब देखें, इसे जावे न भूल।।

स्त्री का जब टेवा हो, देव गुरु को देख।
बृहस्पति ही कर सकता, कोई मीन या मेख।।

नर जातक की कुण्डली में, भृगु यदि अनुकूल।
भौम नहीं कर पायेगा, फल उसको प्रतिकूल।।

उपरोक्त कुण्डली एक पुरुष की है, शुक्र लाभ भाव में है।

लग्न भाव गृह सातवां, पाप रहित शुभ होय।
भृगु बसे सुख सदन में, दोष अमंगल खोय।।

सातवें घर का अधिपति, खाना त्रिक न जाय।
अस्त नीच राशि न होवे, अमंगल दोष मिटाय।।

गुण मिलापक सारणी में, गुण 26 से अधिकाय।
त्रेता युग तीन पर्गों का, कलियुग का इक पाय।।

शुभ मुहूर्त शुभ वेला से, करे नहीं खिलवाड़।
टीस नहीं सीने 'जिन्दल', न दुःखे कभी भी दाढ़।।

मंगल महादशा

'जिन्दल' निश्चय जानिये, भौम दशा बद आय।
जातक से वह छीन कर, कुछ नह कुछ ले जाय।।

रक्तचाप को बल देवे, जटिल कठिन से रोग।
रक्तवाहिनी नाड़ियों में, हो जाता गतिरोध।।

कैंसर जैसा रोग बने, यह हो यदि प्रतिकूल।
पीड़ा की दाहक अग्नि, कोयला या फिर धूल।।

माना सेना नायक है, बहुत बली बलवान।
पर समर्थ ही कर सके, हानि और नुक्सान।।

इसकी दशा भोग समय, कभी न आंखें मूंद।
इसका मारा न मांगे, पानी की इक बूंद।।

भौमवार का स्वामी है, अंगारक है नाम।
खून–खराबे का मालिक, वाद विवाद ही काम।।

भौमवार को चोट लगे, गहरा होगा घाव।
घायल नांहि झेल सके, बद मंगल की ताव।।

नीच अस्त या पाप संग, कुण्डली में श्रीमान।
अपनी दशा के भोग समय, करे सदा नुक्सान।।

शल्य चिकित्सा करवा दे, दुर्घटना या चोट।
शनि के जब संसर्ग में, टेंटुवा[1] देवे घोट।।

गुरु देव की शुभ दृष्टि, शुभ कर्मो के हेत।
प्रभु रखे जिसको 'जिन्दल', कहां सूखे वह खेत।।

---

[1] गला

विशेष योग

भाग्य भाव का अधिपति, दूजे हो बलवान।
धन पति गृह ग्यारहवें, जातक हो धनवान।।
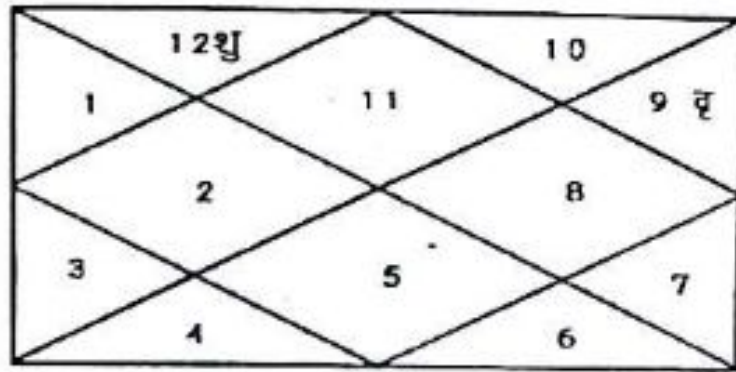
धन लग्न में जीव हो, त्रिषडाय ग्रह क्रूर।
भृगु बसे सुख सदन में, वाहन सुख भरपूर।।
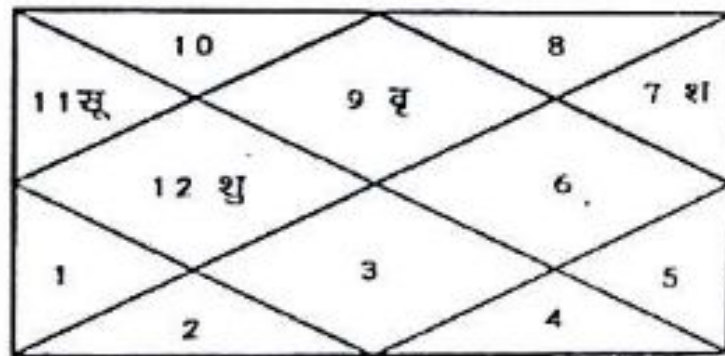
धन–मीन या कर्क में, गुरु बैठे शुभ साख।
ज्योतिष जैसा ज्ञान दे, खोले तीसरी आंख।।

जीव शशि औ' सूरज राहु, पड़े कर्क में आन।
स्वाभिमानी हो जातक, लोग कहें अभिमान।।

ॐ

मीन लग्न से आठवें, जीव शशि युत होय।
कुज पंचम में आ बसे, सुत सुख नासे सोय।।
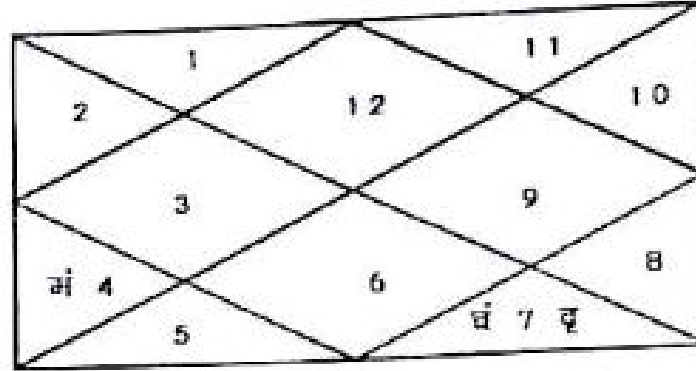
सहज भाव का अधिपति, त्रिक नीच या क्षीण।
मंगल रिपु घर बैठ कर, सुख भाई ले छीन।।
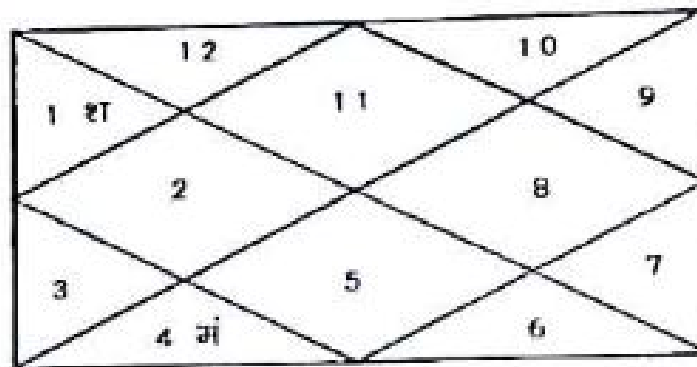
राहु शशि से युक्त कहीं, बारहवें हो खग क्रूर।
ऐसा जातक देखा है, नींद चैन से दूर।।

तन गृह राशि कुम्भ हो, सिंह मकर या कर्क।
पति-पत्नी के दरमियान, दरशावे कुछ तर्क।।

शनि-भृगु या बुध राशि में, छठे जो राहु देख।
निज दशा के भोग काल में, करे मीन को मेख।।

मकर लग्न चौथे भानु, उन्नत और बलवान।
भले ही दे उँचा आसन, करे सदा परेशान।।
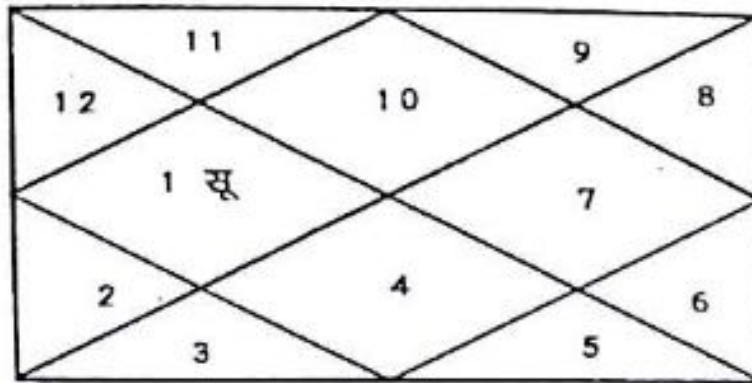
लग्न पड़े राहु केतु, दोनों ही प्रतिकूल।
जातक पथ से विचलेगा, कर बैठेगा भूल।।

धनुष लग्न का जातका, धर्मी हो या धनवान।
चतुर मतलबी ढोंगी हो, मान सके तो मान।।

गुरु लग्न या पंचम घर, अथवा नौवें भाव।
विष में अमृत घुल जाय, हो जायेगा बचाव।।

धन राशि का चन्द्र षष्ठ में, कुज संग राहु नीच।
शल्य चिकित्सा करवाय, सादसती के बीच।।
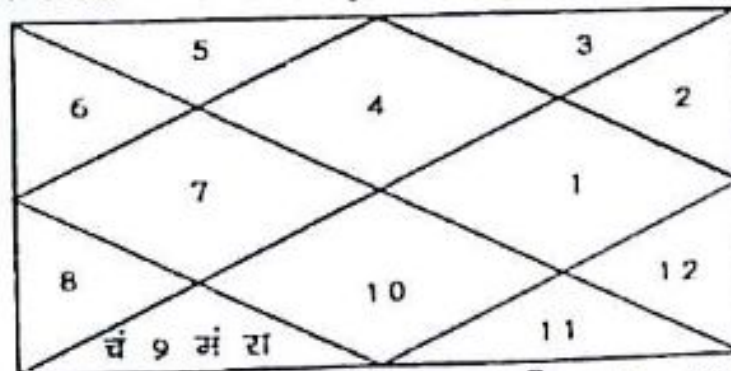
आंत रोग होता इसमें, दुर्घटना या चोट।
दर्द अपेंडिक्स बढ़े तो, नाड़ी में विस्फोट।।

Scanned by CamScanner

ॐ

पत्री में यदि नीच पड़े, किसी भाव का ईश।
जातक को उस भाव से, उठेगी 'जिन्दल' टीस।।

जिस भी भाव का अधिपति, पत्री में त्रिक जाय।
जातक को उस भाव की, चिन्ता सदा सताय।।

मेष राशि में जब शनि, भोगे अपना भोग।
अंग नाशक आंधी चले, फैले पोलियो रोग।।

भृगु भौम का निज राशि, मेल अगर हो जाय।
लग्न सातवें घर अकसर, लव मैरिज करवाय।।
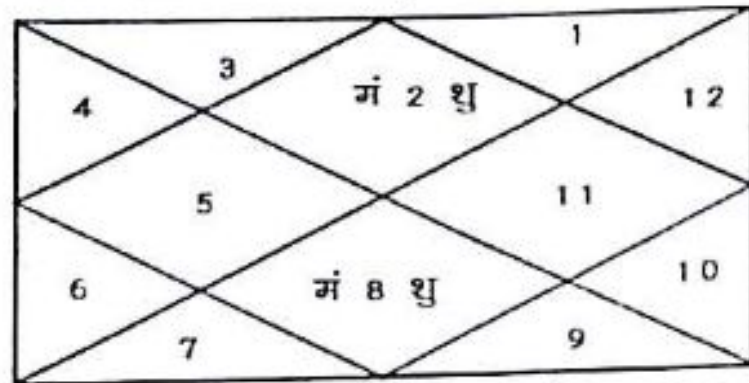
तृतीय भाव का अधिपति, सातवें घर पड़ जाय।
सप्तमेश हो नीच का, मैरिज लेट कराय।।
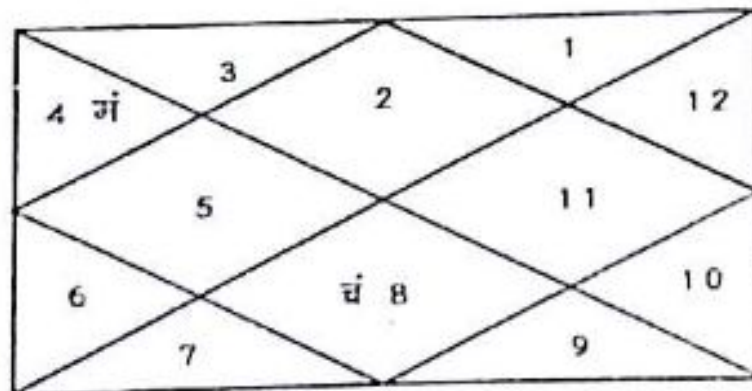
नौवां घर तप की भूमि, धर्म-कर्म का फेर।
सप्तमेश नीच का नौवें, करे विवाह में देर।।

पांचमें घर कन्या/वृष, शनि का इसमें वास।
कामिता पौरुष संतति, अब भृगु के पास।।
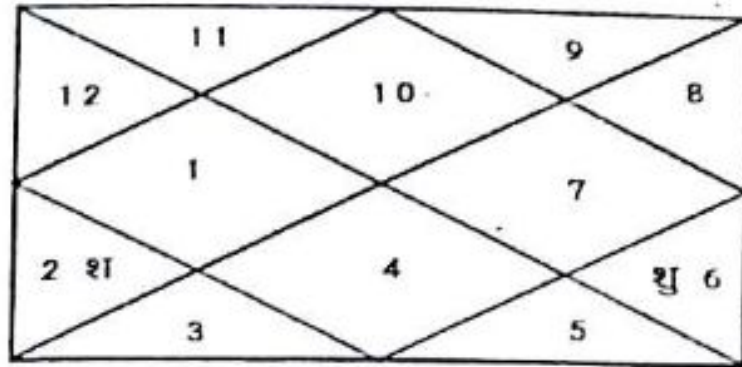
सप्तमेश छठे बारहवें, कारक हो कमजोर।
बहुत देर से शादी होगी, बहुत लगेगा जोर।।
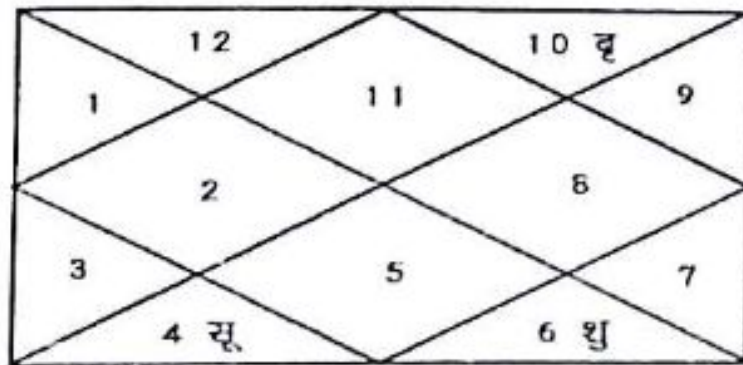
भौम शनि की युति बने, या हो दृष्टि का योग।
रोग शोक भय कष्ट व्यापे, त्राही त्राही लोग।।

मंगल-राहु-शनि या भानु, यह चारों या तीन।
कुण्डली में जिस घर देखें, उसकी बजा दे बीन।।

त्रिक भाव के अधिपति, दशा या अन्तर बीच।
कष्ट सदा ही दे 'जिन्दल', पैर धसेंगे कीच।।

ॐ

मृत्यु कारक लग्न पड़े, आठवें हो तनु नाथ।
जाने किस मोड़ पे प्राणी, खोलदे अपने हाथ।।
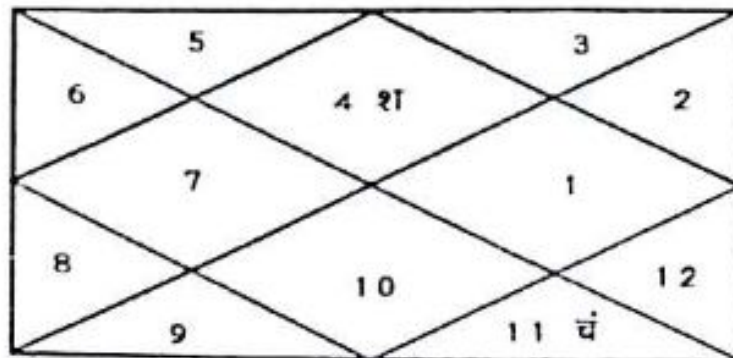
आठवें तम या पाप ग्रह, अष्टमेश कमजोर।
कब तक भार उठायेगी, कच्चे सूत की डोर।।
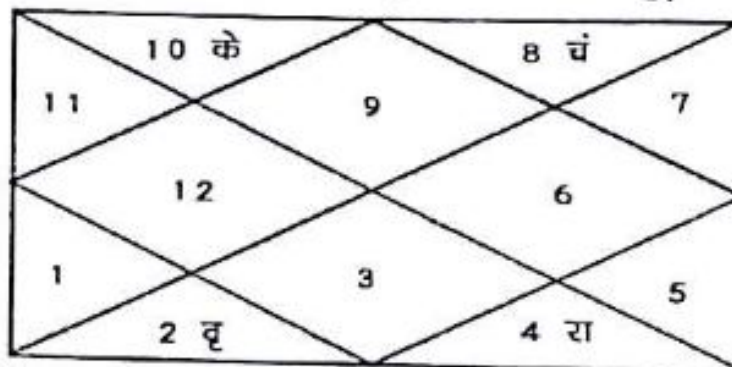
चन्द्र पड़े जब आठवें, करे आयु की हानि।
अरिष्ट निवारक हैं 'जिन्दल', शिव शंकर भगवान।।

तृतीय भाव का अधिपति, भाव दशम में जाय।
या दशमेश हो तीसरे, जन-सम्पर्क बढ़ाय।।
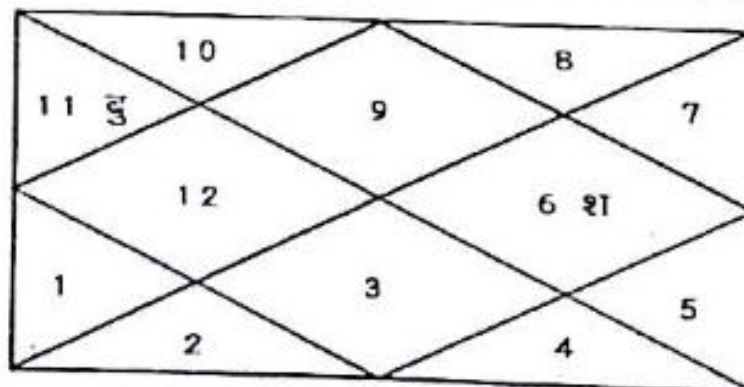
मेष वृश्चिक उच्च मंगल, केन्द्र कोण में आय।
हीन बली और अस्त न हो, भाई बड़ा कहलाय।।

अपने बेगाने लगें, दिन लगता हो रात।
समझो 'जिन्दल' चल रहा, राहु तुम्हारे साथ।।

राहु-शनि युति

राहु-शनि का मेल है, पूर्व जन्म का पाप।
भूत-प्रेत की बाधा है, या फिर कुपित-श्राप।।
मन्दिर गिरते दिखते हैं, पानी से भय होय।
कानों में गूंजन होता, मुर्दा जैसे रोय।।
पेट में कीड़े काटते, औषधि काम न आय।
वात रोग की डाकिनी, धूम्र वर्ण-कषाय।।
जीवन भर तडफायेगा, दो मुःह वाला नाग।
मन्दिर तोड़ा था तुमने, संत जलाया आग।।
जन्म जहां तेरा होगा, या फिर तेरा वास।
एक बार तो आयेगा, सर्प तुम्हारे पास।।
सचमुच या फिर वहम में, या निद्रा के बीच।
सर्प की छाया भय देगी, यह पत्थर में लीक।।
पर्वत चोटी से गिरता, अथवा वहना नीर।
भूत-प्रेतों में रहना, या बंधना जंजीर।।
विष धोखे से दे दिया, करवाया अभिचार।
बली हव्स की चढ़ गई, अबला कोई बीमार।।
लग्न सातवें यह युक्ति, गृहस्थ नरक दरशाय।
तन्त्र मन्त्र या जन्त्र से, प्राणी कष्ट उठाय।।

ॐ

सताईस योगों का फल

विषकुंभ से वैधृति तक, कुल सताईस योग।
इन योगों में हैं छुपे, शब्द अर्थ और भोग।।

पहिला योग विष्कुंभ है, घडा जहर का जान।
इसमे जो भी कुछ हुआ, उसे अशुभ ही मान।।

योग दूसरा प्रीति है, प्रेम हर्ष और प्यार।
इसके अन्तर्गत मिले, आदर और सत्कार।।

आयुष्मान भव कह रहा, तीसरा योग महान।
सर्वत्र ही शुभ फ्ल दे, 'जिन्दल' निश्चय मान।।

चौथा योग सौभाग्य, मंगल दायक योग।
विवाह आदि शुभ कर्म में, करें इसका उपयोग।।

बहुत सजीला रमणीय, शोभन नामक योग।
यात्रा और शुभ कर्म में, अपनाते हैं लोग।।

अतिगंड अति दुःखभरा, शुभ कर्म में त्याग।
इसकी गठ्डी में बधे, धोखे और अवसाद।।

सुकर्मा में उत्तम है, धर्म कर्म के काम।
नौकरी या व्यवसाय में, या फिर ईश्वर नाम।।

धृति नाम के योग में, शिलान्यास के काम।
जीवन भर मिलता रहे, सुख सुविधा आराम।।

ॐ

नवम योग है दुःख भरा, नाम पड़ा है शूल।
हानि और परेशानी ही, इसका अर्थ है मूल।।

गंड नाम का योग है, अडचन या फिर गांठ।
शुभ कर्मों में विघ्न है, सूखा कोरा काठ।।

वृद्धि योग में शुभ रहे, कर्म नया रोजगार।
झगड़े बाजी से बचें, औषधि से बीमार।।

ध्रुव योग को शुभ कहा, स्थिर कार्य के हेत।
निश्चित होकर डालिये, नीव में सीमेंट–रेत।।

चोट लगावे अहम को, योग पडे व्याघात।
हर तरफ से विघ्न बाधा, बन्धु छोड़दे साथ।।

शुभ कर्मों में दे खुशी, हर्षण नामक योग।
प्रेत कर्म में छोड़ते, इसे सियाने लोग।।

खरीदारी या शुभ कर्म, वज्र योग में छोड़।
लाभ के बदले हानि है, या फिर वाहन चोट।।

योग सोलवां है सिद्धि, सफल करे हर काम।
शुभ कार्यों में मन लगा, जप ले प्रभु का नाम।।

व्यतिपात जब योग हो, काम में हो नुक्सान।
व्यर्थ उपद्रव हो खडा, या फिर हो अपमान।।

मंगल दायक कर्म में, शुभ होता वरीयान्।
प्रेत कर्म या पाप में, देता है नुक्सान।।

तेज धार का शस्त्र है, परिघ नाम का योग।
शत्रु दमन के कामों में, अपनाते हैं लोग।।

शुभ फलदायक योग है, शिव है इसका नाम।
भजने को हरि नाम है, करने को शुभ काम।।

गुरु चरणों में बैठ कर, सिद्धि मिलती जरूर।
ज्ञानीजन रहते सदा, भोग विलास से दूर।।

जब भी कुछ हो सीखना, या करना हो ध्यान।
योग साध्य ही श्रेष्ठ है, अपनावे श्रीमान।।

शुभ नामक शुभ योग है, इसे सदा शुभ मान।
शुभ कर्मो से ही बनता, जातक सदा महान।।

शुक्ल योग भी शुभ कहा, मधुर चांदनी रात।
मन्त्र सिद्ध कर ले बन्धु, गुरु देव हैं साथ।।

शान्ति दायक योग है, ब्रह्म नाम का योग।
मन प्रभुता में लीन कर, छोड व्यर्थ के भोग।।

ऐन्द्र नामक योग में, राज्य पक्ष के काम।
निश्चित होकर कीजिये, प्रातः-दोपहर-शाम।।

स्थिर कार्य में ठीक है, वैधृति नाम का योग।
भाग दौड़ या यात्रा में, मत करना उपयोग।।

ॐ

ग्रहों की अवस्थायें

जिस भी भाव का अधिपति, उच्च राशि में आय।
जातक के उस भाव का, पुण्य उदय हो जाय।।

नीच राशि में जा पड़े, जिस भी भाव का ईश।
पूर्व जन्म के पाप की, उठे वहां से टीस।।

निज राशि में ग्रह पड़े, हो पूर्ण आजाद।
अगला जन्म सुधार लो, या करले बरबाद।।

सम राशि में बैठ कर, करता सोच विचार।
भूत भविष्य का चिन्तन है, वर्तमान का सार।।

मित्र राशि में बैठ कर, ग्रह करता आराम।
पूर्व जन्म में बन्धु का, बहुत किया था काम।।

शत्रु राशि में खग दुःखी, पंख बहुत फड़काय।
करनी का फल है 'जिन्दल', जो बोया सो पाय।।

वक्री ग्रह विचलित रहे, भूतकाल तड़फाय।
पूर्व जन्म के मोह का, बन्धन छूट न पाय।।

अस्त पड़े जो ग्रह 'जिन्दल', वह ऋणी वेजार।
पूर्व जन्म में सुप्त था, वर्तमान बेकार।।

ॐ

कुयोग

तिथियां नक्षत्र वारों से, बनते योग कुयोग।
कुयोगों से जो बचें, वही सियाने लोग।।

तिथि पांचवी हस्त पड़े, दिन होवे रविवार।
पड़वा-छठ-एकादशी, यह सब हैं बेकार।।

मृगशिरा हो सोम को, संग षष्ठी पड़ जाय।
दूज-सप्तमी-द्वादशी, हानी ही करवाय।।

भौमवार को सप्तमी, अश्विनी का हो साथ।
पड़वा-छठ-एकादशी, सब की सब हैं घात।।

अनुराधा बुध को पड़े, तिथि अष्टमी होय।
तीज-त्रयोदशी कष्ट दे, काम करे तो रोय।।

पुष्य होवे गुरुवार को, रिक्ता तिथियां जान।
लाभ के बदले हो जाये, हानि और नुक्सान।।

भृगुवार हो रेवती, तिथि दशमी पड़ जाय।
दूज-सप्तमी-द्वादशी, कष्ट-क्लेश बढ़ाय।।

शनिवार को एकादशी, रोहिणी का हो मेल।
या फिर पूर्ण तिथियों को, भाग्य करेगा खेल।।

ॐ

रत्न

नौ रत्न नव ग्रहों के, उप रत्न हैं अनेक।
सुख समृद्धि हेतु पहनों, प्रथम करो अभिषेक।।
रत्न पहनना हो 'जिन्दल' तो हैं वर्ग[1] आधार।
निज वर्ग का उत्तम है, करदे बेड़ा पार।।

माणिक्य

माणिक्य सूर्य रत्न है, लाल रंग का लाल।
रास जिसे भी आ जाये, करदे माला माल।।
मेष का रुबी[2] पंचमेश, फल देगा अनुकूल।
विद्या बुद्धि खूब बढ़ेगी, संतति सुख है मूल।।
वृष लग्न या राशि को, अधिक नहीं यह ठीक।
सुख का स्वामी होकर भी, दसवें मारे छींक।।
मिथुन का यह साहस है, कर देगा बलवान।
किन्तु इसको शनि दशा में, मत पहनें श्रीमान।।
धन स्वामी है कर्क का, खूब बढ़ावे कोष।
आत्मा को मारक का, नहीं लगेगा दोष।।

[1] पीछे लिखे एक रहस्य में क-ख वर्ग   [2] माणिक्य

ॐ

सिंह का माणिक्य ईश है, आत्मा रूपी प्राण।
सृष्टि का पालक कहो, या विष्णु भगवान।।

कन्या का व्यय ईश है, या फिर बायीं आंख।
धन हानि माणिक्य करे, लगे आंख में फांक[1]।।

तुला का लाभ ईश है, पर कम देगा लाभ।
नीच तुला तोलोगे तो, मँहगा पड़ेगा भाव।।

वृश्चिक को शुभ फल दे, बन जाता दशमेश।
राज्य पिता के बल पर, मौज करे लग्नेश।।

धन का यह भाग्येश है, भाग्य बड़ा बलवान।
भाग्य बढ़ाये माणिक्य, बहुत करे कल्याण।।

अष्टमेश यह मकर का, कभी न करना भूल।
बीच भँवर डोले किश्ती, मिल नहीं पावे कूल।।

[1] लकड़ी का टुकड़ा भाव - चोट

ॐ

मोती

चन्द्रमा का रत्न मुक्ता, मन हृदय का सार।
मन मस्तक के रोग मिटावे, गुंजा[1] होवे चार।।

मेष लग्न या राशि को, नहीं करे नुक्सान।
माता तो सुख की दाती, सदा करे कल्याण।।

वृषभ राशि वालों का, साहस खूब बढ़ाय।
साढ़सती राहु दशा में, मोती काम न आय।।

मिथुन को धन दे मोती, ऐसा है अनुमान।
धन का लालच खो देता, भले बुरे का ज्ञान।।

कर्क लग्न या राशि की, मोती होता जान।
शंकर जी अरु मां भवानी, सदा करें कल्याण।।

सिंह वाले का अकसर यह, खर्च बहुत करवाय।
केवल मन के धीरज हेतु, कभी न पहना जाय।।

कन्या राशि वालों के, लाभ भाव का ईश।
मंगल–राहु–बुध दशा में, न पहनावें मनीष।।

तुला राशि दैत्य गुरु की, मोती है राजेश।
एक रंग एक ही धातु, है इतना ही विशेष।।

[1] रत्ती

ॐ

भाग्य बड़ा बलवान है, यह वृश्चिक का भाग।
भाग्य यदि सुप्त पड़ा हो, इससे उठेगा जाग।।

यदि लग्न या राशि धन है, तब मोती का साथ।
जन्म मरण के भेद को, जाने भोले नाथ।।

मकर राशि के गृहस्थ को, मोती बहुत बचाय।
किन्तु मन्द औ' चन्द्र गति में, मेल कहां हो पाय।।

रोग बढ़ावे कुम्भ का, मोती करे नुक्सान।
छः शत्रु बहुत बली हैं, बचे इनसे इन्सान।।

मीन लग्न या राशि का, पंचमेश रजनीश।
संतति विद्या शुभता हेतु, पहनाते हैं मनीष।।

मूंगा

मंगल का रत्न मूंगा, एक नाम प्रवाल।
रक्त दोष का नाश करे, बजरंगी सा लाल।।

मेष लग्न या राशि को, उत्तम फल यह देत।
मूंगा शुभ माना जाये, सुख संपन्नता हेत।।

वृष लग्न का जातक, करे इससे परहेज।
मूंगा कंटक[1] बींधाता, फूलों वाली सेज।।

मिथुन राशि का जातका, रहे मूंगे से दूर।
लाभ नहीं दे पायेगा, छठे भाव का क्रूर।।

कर्क राशि के प्राणी को, मूंगा है अनुकूल।
राज्य कृपा औ' बुद्धि बल, खिले गुलशन में फूल।।

भाग्य जगावे सिंह का, सुख देवे प्रवाल।
खुशहाली के वास्ते, इसको लेवे डाल।।

कन्या वाले जातक को, विष होगा प्रवाल।
भुजबल पर न इतराना, काल तो आखिर काल[2]।।

तुला लग्न या राशि को, दे मारक प्रभाव।
सोच समझ कर डालना, तुम मूंगे का भाव।।

---

[1] कांटे   [1] भाव - आठवें भाव का स्वामी

ॐ

वृश्चिक राशि वाले का, मूंगा है लग्नेश।
दोष नहीं लग पायेगा, रोग भाव षष्ठेश।।

धन राशि के जातक को, सुत विद्या का लाभ।
मूंगा खर्च बढ़ायेगा, तेज करे स्वभाव।।

मकर राशि का जातका, सुख या लाभ के हेत।
भले ही मूंगा डाल ले, बच न सकेगा खेत।।

कुम्भ राशि को मूंगे का, फल होगा प्रतिकूल।
नीलम और पन्ने संग, कभी न पहनो भूल।।

मीन वाले को चाहिये, मूंगा रक्खें पास।
धन परिवार बढ़ायेगा, भाग्य बनेगा दास।।

यदि पहनना हो मूंगा, रखे सदा यह ध्यान।
चार रत्ती के तोल का, मत पहनें श्रीमान।।

मूंगे के संग ठीक नहीं, पन्ना–नीलम–गोमेद।
बल्ड ग्रुप में विषमता, रंगो का है भेद।।

पन्ना

पन्ने का रंग हरा है, सोमज[1] की है जान।
विष वमन को दूर करे, बुद्धि करे बलवान।।

मेष राशि का जातक, डाले पन्ना हाथ।
बन्धु रुष्ठ हो जायेंगे, शत्रु रहेंगे पास।।

वृष राशि जिसकी बने, लेवे पन्ना डाल।
धन विद्या बढ़ती रहे, सुख दे बाल गोपाल।।

मिथुन राशि के वास्ते, है पन्ना अनुकूल।
तेज बढ़े और सुख मिले, कभी हिले नहीं चूल।।

कर्क राशि को पन्ने से, नही मिलेगा लाभ।
मिट्टी-पानी-रेत के, बढ़ जायेंगे भाव।।

सिंह को पन्ना देता है, अकसर धन औ' माल।
किन्तु शनि दशाकाल में, देवे इसे निकाल।।

कन्या जिसकी राशि है, उसको अमृत जान।
सज्जन प्राणी बन्धु का, नहीं करते नुक्सान।।

तुला लग्न या राशि को, पन्ना शुभ फ्ल देत।
निश्चित होकर डाल ले, भाग्य बढ़ाने हेत।।

[1] बुध

वृश्चिक वाला जातका, माने मेरी बात।
लाभ के बदले हानि की, पन्ना है सौगात।।

धन वालों को देत है, सुख जाया या राज।
किन्तु 'जिन्दल' पन्ने पर, अधिक न करना नाज।।

भाग्य बढ़ावे मकर का, छः रत्ती का भार।
नीलम हीरा पन्ने संग, करदे बेड़ा पार।।

कुम्भ राशि के वास्ते, बहुत नहीं है ठीक।
पन्ना तब ही डालिये, पंचम घर हो लीक।।

मीन राशि का जातका, जाया सुख के हेत।
बेशक पन्ना डाल ले, नहीं सूखेगा खेत।।
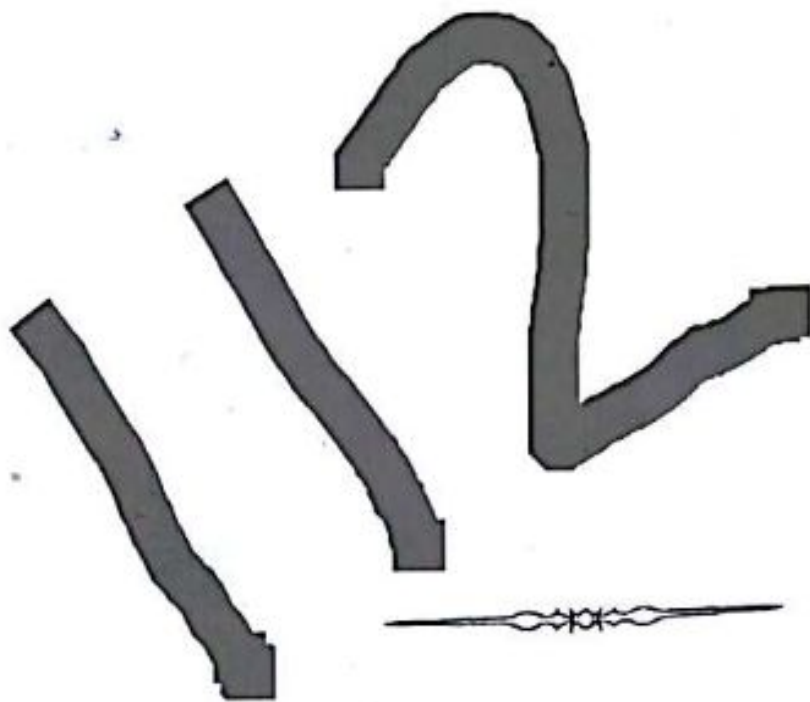
पुखराज

पीतमणी पुखराज है, देव गुरु की जान।
सम्भव हो तो सोने में, जड़वावें श्रीमान।।

मेष लग्न या राशि को, बल देगा पुखराज।
संतति-विद्या लाभ हो, सिर पर रहता ताज।।

लाभ के बदले हानि दे, अष्टम घर का बाज।
वृषभ राशि का जातका, मत पहने पुखराज।।

मिथुन राशि के वास्ते, न बद है न ही नेक।
राज्यभाव स्त्री सुख की, पीतमणी है टेंक'।।

कर्क राशि वाला प्राणी, करे धारण पुखराज।
विद्या वृद्धि औ' बल बढ़े, सुधरें बिगड़े काज।।

संतति विद्या वृद्धि में, पड़ता हो अवरोध।
सिंह राशि वाला करे, पीतमणी पर शोध।।

पति/पत्नी का कारक है, सुख भी है पुखराज।
कन्या राशि वाला जातक, बहुत करे नही नाज।।

तुला लग्न या राशि को, फ्ल न देत अनुकूल।
देव गुरु का रत्न रहेगा, जातक को प्रतिकूल।।

' सहारा

वृश्चिक राशि का जातक, धन विद्या के हेत।
गुरु रत्न धारण करले, शुभ फल ही यह देत।।

धनुष लग्न का जातका, रक्खे इसको पास।
सुख संपत्ति पुखराज से, सदा रहेगी दास।।

खर्च बढ़ावे मकर का, बहुत नहीं यह ठीक।
गुरु के रत्न पुखराज से, ज्योतिष विद्या सीख।।

कुम्भ वाले को चाहिये, धन दौलत और लाभ।
शनि दशा में ही करे, पीतमणी का भाव।।

मीन राशि वाला इसे, पहने तर्जनी बीच।
राज्य भाव से सुख मिले, पांव धँसे नहीं कीच।।

यदि बालिका की शादी में, पड़ता हो अवरोध।
ज्योतिर्विद तब करते, पीतमणी पर शोध।।

ॐ

हीरा

दैत्य गुरु का रत्न है, हीरा जिसका नाम।
पारखी ही डाल सके, भृगु रत्न का दाम।।

मेष और वृश्चिक राशि को, हीरा कम फल देत।
काम फ़क्त यह आयेगा, विवाह कराने हेत।।

वृष औ' तुला का जातक, हीरे से सुख पाय।
किन्तु पीतमणी के संग, कभी न पहना जाय।।

मिथुन–कन्या राशि वाले, लेवें हीरा डाल।
अच्छे बन्धु बुरे समय में, बन जाते हैं ढाल।।

कर्क–सिंह राशि को हीरा, न बद ही है न नेक।
लग्न ईश से कटुता है, वैसे सुन्दर टेंक।।

मकर–कुम्भ का जातका, हीरा डाले हाथ।
सुख समृद्धि हासिल हो, विजय रहेगी साथ।।

धन–मीन के जातक को, हीरा नहीं है ठीक।
त्रिक भावों का ईश है, शुभ पर फेरे लीक।।

यदि युवक की शादी में, पड़ता हो अवरोध।
वज्र मुद्रिका[1] डाल ले, ज्योतिष की है शोध।।

कामिता के जब हो कमी, पुरूष दिखे कमज़ोर।
हीरे का कण डाल ले, नाच उठे मन–मोर।।

---

[1] हीरे की अंगूठी

नीलम

शनि देव का रत्न नीलम, तेज बहुत प्रभाव।
अकस्मात् हानि कर दे, अकस्मात् ही लाभ।।

मेष–वृश्चिक का जातक, करे न इस पर मान।
लाभ के बदले हो जाय, कभी–कभी नुक्सान।।

वृष–तुला राशि वाला, नीलम से सुख पाय।
संतति–विद्या भाग्य घर, बहुत बली हो जाय।।

मिथुन–कन्या के जातक को, सुत या भाग्य हेत।
क्षीण पड़ा हो पत्री में, नीलम शुभ फल देत।।

कर्क–सिंह राशि वाला, करे इससे परहेज।
नीलम कंटक बींधता, फूलों वाली सेज।।

धनु–मीन के जातक को, नीलम एक समान।
धन का लालच खो देता, भले बुरे का ज्ञान।।

मकर–कुम्भ के जातक को, नीलम है अनुकूल।
बिगड़े कारज सुधरेंगे, बिछें राह में फूल।।

नीलम के संग मोती–मूंगा, या सूरज का लाल[1]।
सोच समझ कर डालना, कर बैठे न मलाल[2]।।

[1] माणिक्य [2] गुस्सा

गोमेद

गोमेद है राहु रत्न, सस्ता है पर तेज।
प्रभु-भक्ति करने वाला, करे इससे परहेज।।

सोच समझ कर डालना, कर[1] में तुम गोमेद।
बहुत मायावी रत्न है, बहुत छुपे हैं भेद।।

कर्क-सिंह औ' मेष को, बहुत नहीं अनुकूल।
गुरु दशा में अकसर यह, फल देगा प्रतिकूल।।

राजनीति-सट्टा बाजी, जिसका हो व्यवसाय।
वह जातक छः रत्ती का, गोमेदक अपनाय।।

गृहस्थ सुख जिस जीव का, माने मेरी बात।
भूल कर भी न पहने वह, राहु रत्न[2] को हाथ।।

मिथुन-कन्या राशि जिसकी, उसको शुभ गोमेद।
भौम-गुरु की महादशा में, करने लगेगा छेद।।

धन-मीन वाला जातक, बहुत करे नहीं नाज।
निष्फल हो जाये 'जिन्दल', जीव रत्न पुखराज।।

[1] हाथ [2] गोमेद

लहसुनिया

रत्न लहसुनिया केतु का, ज्यों बिल्ली की आंख।
घने अंधेरे में जैसे, आंख रही हो झांक।।

रक्तदोष का नाश करे, खुजली देत मिटाय।
चर्म रोग को काट दे, भस्म[1] जो इसकी खाय।।

दुर्घटना को टाल दे, हरे कष्ट गम्भीर।
वायु का भी शमन करे, मंगल जैसा वीर।।

मिथुन राशि में केतु हो, रत्न न इसका डाल।
पतन शुरू हो जायेगा, झड़ने लगेंगे बाल।।

विजय पताका फहरा दे, रत्न केतु दरवेश।
जिस राशि में बैठा हो, सुने उसका संदेश।।
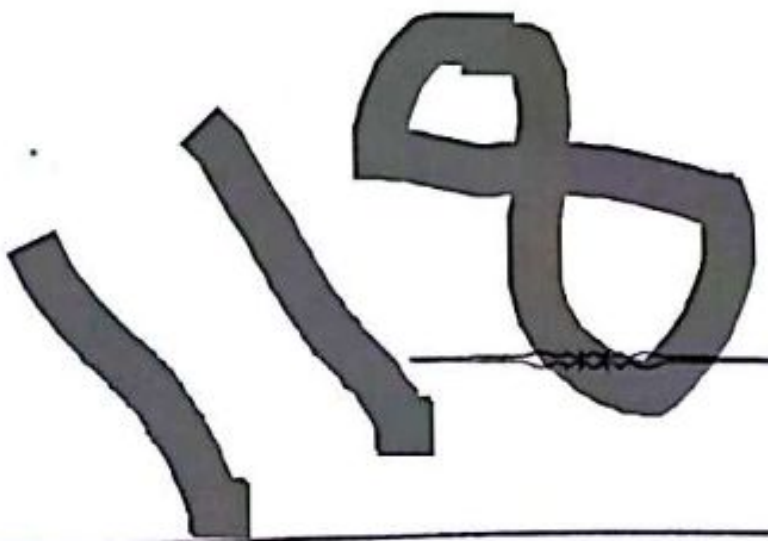
[1] एक आयुर्वेदिक औषधि

सरल उपाय

बुधवार को सब्ज चारा, गाय माता को भेंट।
तन मन के सब कष्ट हरे, संकट देवे मेट।।

रविवार ढलते रवि को, अर्घ चढ़ा कर देख।
ज्वर उतरने लग जायेगा, यह पत्थर में मेख।।

कुत्ता जाति के जन्तु को, माना है दरवेश।
इसकी प्रार्थना करती है, प्रभु के घर प्रवेश।।

निज भोजन का अंश यदि, इसको डाला जाय।
रोग-शोक भय काट दे, संकट दूर भगाय।।

पीसे गेहूं की गोली, राहु चाव से खाय।
जल में डूबी मीन को, बट-बट रोज खिलाय।।

संकट मोचन हैं 'जिन्दल', बंजरगी हनुमान।
जब भी संकट घेर ले, करलें इनका ध्यान।।

पक्षियों को भोजन डाले, दुर्बल पर उपकार।
दीन दुःखी की सेवा से, खुश होते करतार[1]।।

[1] ईश्वर

केन्द्र कोण में शुभ खग हो, त्रिषडाय हों क्रूर ।
सुख-समृद्धि प्राप्त हो, हर्ष मिले भरपूर।।

जन-जन का कल्याण हो, ज्योति हरे अँधियार ।
'जिन्दल' की 'मुक्तामाला', भक्त करें स्वीकार।।